अध्याय–7

ह्रास, प्रावधान तथा संचितियाँ
(Depreciation, Provisions and Reserves)

सीखने के उद्धेश्य (Learning Objective)

इस अध्याय का अध्ययन करने के पश्चात् आप जान सकेंगे कि :

मूल्य ह्रास क्या है तथा इसका लेखांकन करना क्यों आवश्यक है ?
सम्पत्ति के मूल्य में ह्रास किन किन कारणों से होता है ।
ह्रास की राशि किन किन तत्वों से प्रभावित होती है ।
ह्रास के सम्बन्ध में किन किन तकनिकी भाब्दों का प्रयोग होता है ।
ह्रास के लेखांकन की विधियां, उनके पारस्परिक गुणदोष तथा उनमें अन्तर ।
ह्रास की गणना तथा इसमें समयावधि का महत्व
आयोजन क्या है तथा आयोजन करने का उद्धेश्य क्या है ?
व्यापारी द्वारा कितने प्रकार के आयोजन बनाये जाते है ?
संचय क्या है तथा संचय कितने प्रकार के होते है ?
प्रावधान और संचय में क्या अन्तर है ?

प्रस्तुत अध्याय को दो भागों में विभाजित किया गया है प्रथम भाग मे स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में होने वाली क्रमिक कमी को मूल्यह्रास के नाम से समझाया गया है तथा अध्याय के दूसरे भाग में व्यवसाय की सुदृढ़ता के लिये बनाये जाने वाले प्रावधान एवम् संचयों के बारे में विवेचन किया गया हैं

आय तथा व्ययों के मिलान की अवधारणा हमें यह बताती है कि किसी लेखा वर्ष से सम्बन्धित आय में से उस लेखा वर्ष से सम्बन्धित व्ययों को घटाकर (अर्थात आय तथा सम्बंधित व्ययों का सही तरीकें से मिलान करके) उस लेखा वर्ष का सही लाभ हानि ज्ञात किया जाना चाहिये । यदि व्यवसाय में किये गये व्यय का लाभ एक से अधिक लेखा वर्षो तक मिलता हो तो निरन्तरता की अवधारणा (Going Concern Concept) के अनुसार उस व्यय को उतनी अवधि में बांट दिया जाता है जितने समय तक उस व्यय का लाभ मिलना अनुमानित है । इसी तथ्य को समझाना इस अध्याय का प्रमुख उद्धेश्य है ।

भविष्य में होने वाले व्यय एवं हानियों का सही सही अनुमान लगाना संभव नही होता परन्तु रूढिवादिता की परम्परा के अनुसार इनका पर्याप्त प्रावधान किया जाना चाहिये ताकि वर्तमान लाभ बढे हुए प्रदर्शित न हो । इसी तरह भविष्य की विस्तार योजनाओं तथा विकास के लिए लाभों में से कुछ राशि संचित करके अलग रखी जानी चाहिये । इससे भविष्य में व्यापार की विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकेगी।

मूल्यह्रास का अर्थ (Meaning of Depreciation):

निरन्तर उपयोग करते रहने के कारण वस्तु का क्षय होता रहता है । कुछ वस्तुएं प्रयोग न करने पर भी प्राकृतिक कारणों से या केवल समय बीतने के साथ क्षीण होती रहती हैं । वस्तु की नई नई तकनीकों के विकसित होने से भी पुरानी वस्तुऐं कम महत्व की हो जाती है । इस तरह से किसी व्यापार गृह की विभिन्न सम्पत्तियो के मूल्य विभिन्न कारणों से कम होते रहते है और स्थायी सम्पत्तियां व्यापार में प्रयोग करने के लिये खरीदी जाती हैं, पुनव्रिकय के लिए नहीं, अतः स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में होने वाली इस कमी का स्वतन्त्र लेखांकन होना आवश्यक है । विभिन्न कारणों से स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में होने वाली इस कमी को लेखांकन की भाषा में मूल्यह्रास करते हैं ।

परिभाषा (Definitions)

'' सम्पत्ति के मूल्य में किसी भी कारण से होने वाली क्रमिक या धीरे धीरे और स्थायी कमी को मूल्यह्रास कहते है ।''

कार्टर

''मूल्यह्रास को सम्पत्ति के प्रयोग के कारण मूल्य में होने वाली क्रमिक या धीरे धीरे कमी के रूप में परिभाषित किया जा सकता हैं ।''

आर. जी. विलियम्स

''मूल्यह्रास उस पूंजी में होने वाली हानि का प्रतिनिधित्व करता हैं जो भवन, संयत्र, मशीन तथा अन्य उपकरण आदि जैसे में लगायी जाती हैं तथा जो इन सम्पत्तियों के जीवन काल में सामान्य तथा अत्यावश्यक कमी के कारण हुई हैं।''

एम. जे. व्हेलडन

''यह एक सामान्य ज्ञान की बात हैं कि सभी स्थायी सम्पत्तियां जैसे संयत्र, मशीनें, औजार, भवन, पट्टे, फर्निचर आदि जैसे जैसे पुरानी होती जाती हैं वैसे वैसे इनके मूल्य में कमी आती रहती हैं तथा व्यापार में नियमित उपयोग होने से बेकार हो जाती है ।''

जे . आर . बाटलीबॉय

मूल्यह्रास के प्रमुख कारण (Causes of Depreciation)

व्यापार में स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य में कमी निम्नलिखित कारणों से होती है :

(i) सम्पत्तियों का निरन्तर प्रयोग (Constant use of assets): व्यापार की संचालन क्रिया के अन्तर्गत सम्पत्तियों का निरन्तर प्रयोग किया जाता है तो इनमें घिसावट होती है जिसके परिणाम स्वरूप सम्पत्तियों का मूल्य उत्तरोत्तर कम होता रहता है ।

(ii) पूर्व निर्धारित समय व्यतीत होने पर (Passes of predetermined time): यदि किसी सम्पत्ति के प्रयोग का अधिकार एक निश्चित अवधि के लिए ही प्राप्त किया गया हो तो इसके लिए जितना मूल्य चुकाया गया है उसे उक्त अवधि में अपलिखित करना आव यक होता है । जैसे पट्टट धृत सम्पत्ति (Lease hold property), अनुज्ञापत्र (license) आदि के प्रयोग का अधिकार निश्चित समय के बाद समाप्त हो जाता है ।

(iii) क्षयीकरण (Depletion): यदि निश्चित राशि चुकाकर किसी सम्पत्ति से पूर्व निर्धारित मात्रा में वस्तु के निष्कासन का अधिकार प्राप्त किया जाता है तो जिस अनुपात में अवशिष्ट सामग्री की मात्रा धटती जाती है उसी अनुपात में चुकाया गया मूल्य भी अपलिखत करना आवश्यक हो जाता है । जैसे पूर्व निर्धारित मात्रा में भू–गर्भ से खनिज पदार्थ को निकालने का समझौता या एक निश्चित मात्रा में किसी वस्तु के उत्पादन का या प्रयोग का अनुज्ञापत्र प्राप्त करना आदि।

(iv) **सम्पत्ति की समाप्ति** (Expiry of Assets): कुछ सम्पत्तियॉ ऐसी होती है जिनकी उपयोगिता अवधि बीतने के साथ साथ घटती जाती है ओर एक समय सीमा के बाद वे स्वयं नष्ट हो जाती है जैसे– पशुधन, मूल्यवान पेड, पौधे आदि ।

(v) **बाजार मूल्य में कमी** (Fallen in market price): यदि सम्पत्ति के बाजार मूल्य में स्थायी गिरावट आने की संभावना हो तो यह कमी भी मूल्यह्रास के रूप में अपलिखित की जानी चाहिये ।

(vi) **अप्रचलित या अनुपयोगी हो जाना** (Obsolescence):उत्पादन की नई तकनीकों के विकसित होने के कारण पुराने मोडल अप्रचलित हो जाते हैं । उनकी मांग उतनी नहीं रहती । जैसे – स्वचालित मशीनों का आविष्कार हो जाने पर हस्त चालित मशीनों तथा विघुत चालित इंजन के आगमन पर डीजल व स्टीम चालित इंजन आदि की मांग कम हो जाती है ।

(vi) **प्राकृतिक प्रभाव** (Natural Effect): भूकप्प, वर्षा, आन्धी, धूप जैसे प्राकृतिक कारणों से भी कुछ सम्पत्तियॉ क्षीण होती रहती है । जैसे – भवन, जलाशय, लकड़ी, लौहा या पत्थर के ठांचे आदि ।

ह्रास के लेखांकन की आवश्यकता (Need for charging Depreciation):

एक व्यापारी के लिए ह्रास सम्बन्धी लेखांकन करना निम्नलिखत कारणों से आवश्यक माना जाता है –

(i) लाभ या हानि की सही गणना (Calculation of correct profit or loss): किसी व्यापारिक लेखा अवधि के लाभ हानि की गणना करते समय उस अवधि में अर्जित आय में से उस अवधि से संबंधित सभी व्यय तथा हानियॉं घटाई जानी चाहिए । ह्रास भी एक प्रकार की हानि है इसलिए इसका लेखांकन आवश्यक है । इसके बिना व्यापार के लाभ हानि की सही जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती है ।

(ii) **सही आर्थिक स्थिति का प्रदर्शन** (To show correct financial position):व्यापार के स्थिति विवरण में विघमान सम्पत्तियों को उनकी लागत में से ह्रास की राशि घटाकर दिखाना आवश्यक हो जाता है ताकि चिट्ठठा सही आर्थिक स्थिति का प्रदर्शन कर सके ।

(iii) **सही उत्पादन लागत ज्ञात करना** (To ascertain correct cost of production): व्यापार में वस्तुओं का उत्पादन विभिन्न स्थायी सम्पत्तियों की सहायता से किया जाता है । उत्पादन की लागत ज्ञात करते समय सामग्री, श्रम, तथा अन्य उपरिव्ययों के अतिरिक्त स्थायी सम्पत्तियों का ह्रास भी लागत में सम्मिलित किया जाना चाहिए । स्थायी सम्पत्तियों के लिये चुकाया गया मूल्य एक प्रकार से स्थगित आयगत खर्च (deferred revenue expenditure) माना जा सकता है जो

आने वाले कई वर्षो तक प्रयोग में लाने हेतु सम्पत्तियों के क्रय के समय अग्रिम रूप में चुकाया गया होता है । जिसे ह्यस के रूप में प्रति वर्ष अपलिखित किया जाता है ।

(iv) **सम्पत्तियों की पुनर्स्थापना** (Replacement of asset): निरन्तर चलने वाले व्यापार में स्थायी सम्पत्तियों के प्रयोग योग्य न रहने पर उनकी पुनर्स्थापना एक आवश्यक कार्य होता है । अतः भविष्य में उनकी पुनर्स्थापना के लिए आवश्यक व्यवस्था इनकी खरीद के समय से ही प्रारम्भ कर दी जानी चाहिए । इसलिए पुनर्स्थापना चाहे ह्यस कोष पद्धति (Sinking fund method), बीमा पोलिसी पद्धति, वार्षिकी पद्धति, (Annuity method) आदि चाहे किसी विधि से हो, प्रत्येक विधि में प्रति वर्ष सम्पत्ति के सम्बंध में ह्यस का लेखा करना आवश्यक माना जाता है ।

(v) **वैधानिक व्यवस्था की पूर्ति** (Compliance of legal requirements): कम्पनी में लाभांश वितरण करने से पूर्व अधिनियम में निर्धारित विधि से सम्पत्तियों पर ह्यस का लेखा करना अनिवार्य माना जाता है ।

(vi) **आयकर में बचत** (Saving in Income Tax):मूल्यह्यस की राशि को व्यापारी स्वीकृत खर्चो के रूप में लाभ में से घटा सकता है । इससे व्यापारी द्धारा चुकाये जाने वाले आयकर में कमी हो जायेगी और इस प्रकार आयकर कम चुकाना पड़ेगा ।

(vii) **पूंजी में से लाभांश वितरण न होना** (To Prevent distribution of dividend out of capital): यदि ह्यस का प्रावधान किये बिना लाभांश घोषित कर दिया जाय और विद्यमान लाभ ह्यस का प्रावधान करने के बाद लाभांश की राशि के बराबर भी न हो तो इस प्रकार वितरित किया गया लाभांश, पूंजी में से लाभांश का वितरण होता है । ह्यस का लेखांकन करने से इस कानूनी अवमानना से बचा जा सकता है ।

ह्यस से संबंधित विशेष भाब्दावली (Special terminology regarding depreciation):

ह्यस की राशि का निर्धारण तथा उसके लेखांकन की विभिन्न पद्धतियों को समझने से पूर्व स्थायी सम्पत्तियों के मूल्य से संबंधित कुछ शब्दावली पर विचार करना आवश्यक होता है जो इस प्रकार है –

(i) **स्थायी सम्पत्तियों की लागत (Cost of Fixed Assets) :** किसी स्थायी सम्पत्ति का क्रय करने तथा उसे व्यापार के स्थान पर लाकर स्थापित करने का समस्त व्यय सम्पत्ति की लागत मानी जाती है । यदि कोई पुरानी सम्पत्ति खरीदी जाए तो उसे पहली बार उपयोग के लायक बनाने के लिए किया गया प्रारम्भिक मरम्मत का व्यय भी उसके क्रय मूल्य में जोड़कर सम्पत्ति की लागत ज्ञात की जायेगी ।

(ii) **अवशिष्ट मूल्य** (Scrap Value) :किसी स्थायी सम्पत्ति का जीवन काल पूरा हो जाने पर या उसके अनुपयोगी हो जाने पर उस स्थायी सम्पत्ति का जो मूल्य आंका जाता है या प्राप्त होता है वह उसका अवशिष्ट मूल्य कहलाता है । सम्पत्ति की कुल लागत तथा जीवन काल व्यतीत हो जाने के बाद प्राप्त होने वाले उसके अवशिष्ट मूल्य का अन्तर ही उस सम्पत्ति की उपयोगी अवधि में अपलिखित किया जाने योग्य मूल्यह्यस होता है ।

(iii) **अप्रचलन** (Obsolescence) : नई तकनीकों का आविष्कार होने पर पुरानी सम्पत्ति उपयोग के लायक नहीं रह जाती है तथा उसका मूल्य भी प्रायः कम हो जाता है । यह आकस्मिक ह्यस सामान्य ह्यस से भिन्न पूंजीगत प्रकृति की हानि माना जाना चाहिये तथा अप्रचलन वाले वर्ष में या आने वाले कुछ वर्षो के लाभ में से अपलिखित किया जाना चाहिए । इस प्रकार की आकस्मिक हानियों के लिए व्यापार में कोई पूर्वायोजन (Provision) किया गया हो तो इस हानि को उसमें से भी पूरा किया जा सकता है । व्यावहारिक जीवन में प्रायः अप्रचलन के कारण हटाई गई सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य के आधार पर आकलित हानि को आगम हानि मानने की परम्परा है ।

(iv) **सम्पत्ति के बाजार भाव में उच्चावन** (Price Fluctuation in Market Price) : कभी कभी स्थायी सम्पत्तियों के मूल्यों में वृद्धि या कमी हो जाती है । व्यापार में स्थित स्थायी सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्यों पर बाजार भाव के उतार चढाव का प्रभाव डालना आवश्यक नहीं माना जाता । इसका कारण यह है कि स्थायी सम्पत्तियों का व्यापार में क्रय अन्य व्यापारिक माल की भांति विक्रय द्धारा लाभ कमाने के उद्देश्य से नहीं किया जाता । स्थायी सम्पत्तियों का बाजार भाव गिर जाने से उनकी पुनर्स्थापना लागत (Cost of Replacement) कम हो जाती है । कुछ व्यापारी इस प्रकार स्थायी सम्पत्ति के मूल्य में स्थायी रूप से पुनर्स्थापन लागत कम हो जाने पर सम्पत्ति के पुस्तक मूल्यों को कम कर देते हैं ताकि स्थिति विवरण में सही आर्थिक स्थिति दर्शायी जा सके । अधिकांश व्यापारी स्थायी सम्पत्तियों को उनके अपलिखित मूल्यों पर दर्शाते रहते है जो उनकी लागत में से मूल्यह्यस कम करके ज्ञात किए जाते हैं । यदि उपरोक्त प्रकार से स्थायी सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य कम किए जाय तो यह आकस्मिक कमी भी इससे पूर्व वर्णित अप्रचलन की आकस्मिक हानि की ही भांति उसी वर्ष के लाभ में से या सुविधानुसार आने वाले वर्षो के लाभों में से अपलिखित की जा सकती है ।

(v) **दुर्घटना से हानि** (Loss due to accident) :दुर्घटना के कारण होने वाली हानि को भी सामान्य ह्यस न मानकर उपरोक्त वर्णित पद्धति से आकस्मिक हानि मानकर उसे पूंजीगत हानि के रूप में एक या अधिक वर्षो के लाभ में से अपलिखित किया जाना चाहिए ।

(vi) सम्पत्तियों की मरम्मत का व्यय (Amount spent on repairs) : सम्पत्तियों का ह्रास उनके उपयोग से हाने वाली हानि है जबकि मरम्मत पर व्यय उक्त सम्पत्ति को उपयोगी अवस्था में बनाए रखने के लिए किया गया व्यय माना जाता है । दोनों ही मद चालू अवधि के लाभ में से अलग–अलग घटाये जाने चाहिए।

ह्रास की राशि को प्रभावित करने वाले तत्त्व (Factors Affecting the amount of depreciation) : जब तक कि ह्रास की गणना के संबंध में कोई वैधानिक व्यवस्था लागू नहीं होती हो तो ह्रास की राशि का निर्धारण करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिये–

(i) सम्पत्ति की लागत
(ii) उस सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल
(iii) व्यापार में प्रयोग करने लायक न रहने पर उसका अवशिष्ट मूल्य

स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास व्यापार की अन्य लागतों की ही भांति व्यापार चलन की कुल लागत (Total cost of running the business) का एक अंग है । अतः लागत विवरण (Cost Statement) तैयार करते समय इसे लागत में जोड़ा जाता है तथा लाभ हानि की गणना करते समय लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में सम्मिलित किया जाता है।

ह्रास के लेखांकन की विधियाँ (Method of Recording the depreciation)

विभिन्न संस्थाओं में काम आने वाली स्थायी सम्पत्तियों पर ह्रास की राशि का निर्धारण करने की भिन्न–भिन्न पद्धतियां काम में लाई जा सकती है । प्रत्येक व्यापार गृह अपनी आवश्यकता के अनुरूप पद्धति का चयन करता है । ह्रास की राशि का निर्धारण करने के बाद इसका लेखांकन करने की प्रमुख दो पद्धतियां प्रचलित है –

(1) ह्रास की राशि से संबंधित स्थायी सम्पत्ति के खाते को अपलिखित करना (Write off asset account for amount of Depreciation or charging to asset account) :

इस पद्धति में ह्रास की राशि से एक पृथक ह्रास खाता नाम करते हुए संबंधित स्थायी सम्पत्ति खाते को जमा कर दिया जाता है । ह्रास खाता अन्य नाम मात्र खातों की ही भांति वर्ष के लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में हस्तान्तरित कर दिया जाता है तथा उक्त स्थायी सम्पत्ति को अपलिखित मूल्य (लागत में से ह्रास घटाकर) पर स्थिति विवरण में दर्शाया जाता है । ह्रास से सम्बन्ध में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है –

(i) **मूल्यह्रास लगाने पर** (For charging of depreciation):

Depreciation A/c   Dr.
    To Asset A/c
(Being Depreciation charged)

(ii) **वर्ष के अन्त में मूल्य ह्रास खाते का हस्तान्तरण करने पर** (For transfer of depreciation at the end of the year):

Profit and Loss A/c   Dr.
    To Depreciation A/c
(Being Depreciation account transferred)

(2) **ह्रास का प्रावधान करना** (Creating Provision for depreciation /accumulated account) :

इस पद्धति में ह्रास की राशि से संबंधित सम्पत्ति खाते को कम नहीं किया जाता । (सम्पत्ति खाते को हमेशा प्रारम्भिक लागत पर ही दिखाते रहते है।) वार्षिक ह्रास की राशि से ह्रास प्रावधान खाते (Provision for Depreciation account) को जमा करते रहते है । इस प्रकार स्थिति विवरण में सम्पत्ति खाता लागत मूल्य पर सम्पत्ति पक्ष में तथा उस पर अपलिखित किये गये ह्रास से बनाया गया ह्रास प्रावधान खाता दायित्व पक्ष में पृथक से दर्शाया जाता हैं ।

इस सम्बंध में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियां की जाती है –

(i) वर्ष के अन्त में ह्रास का प्रावधान करने पर (Amount provided for depreciation at the end of the year):

Profit and Loss A/c   Dr.
    To Provision for Depreciation A/c
(Being provision made for current year depreciation)

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित दो प्रविष्टियां भी की जा सकती है –(Alternatively following two entries can be passed instead of above):

(i) Depreciation A/c Dr.
To Provision for Depreciation A/c
(Being Depreciation charged)

(ii) Profit and Loss A/c Dr.
To Depreciation A/c
(Being depreciation account transferred)

स्थायी सम्पत्तियो के विक्रय पर लेखांकन (Treatment of disposal of Fixed Assets) ; सम्पत्ति के विक्रय पर तत्कालीन पुस्तक मूल्य की तुलना मे जितनी कम राशि वसूल होती है वह हानि मानी जाती है इसके विपरीत पुस्तक मूल्य से अधिक राशि वसूल होने पर लाभ भी हो सकता है। इस हानि या लाभ के लिए यह कहा जाता है कि सम्पत्ति के संम्बन्ध में आवश्यकता से कम या अधिक ह्रास अपलिखित किया गया होगा या तकनीक बदल गई होगी।

यदि ह्रास के लेखाकन की द्वितीय पद्वति प्रयोग की गई है तो सम्पत्ति खाता लागत मूल्य पर ही दर्शाया गया होगा और विक्रय के समय सम्पत्ति का शुद्व पुस्तक मूल्य ज्ञात करने के लिए उक्त सम्पत्ति खाते के शेष में से उस सम्पत्ति पर अब तक लगे हुए कुल ह्रास की राशि घटानी आवश्यक होगी।

सम्पत्ति के विक्रय पर होने वाली हानि या लाभ वर्ष के लाभ हानि खाते मे हस्तान्तरित किये जा सकते है परन्तु कई बार सम्पत्ति के विक्रय पर उसकी मूल लागत से भी अधिक राशि प्राप्त हो जाती है। सम्पत्ति के विक्रय पर लागत से भी अधिक प्राप्त राशि पूजीगत लाभ (Capital Profit) मानी जावेगी। जैसे यदि एक संयंत्र की लागत 16,000 ₹ हो विक्रय के समय अपलिलिखत मूल्य 9,000 हो तथा विक्रय पर 21,000 ₹ प्राप्त हो जाय तो –

कुल लाभ = विक्रय मूल्य – अपलिखित मूल्य = 21,000₹ – 9,000₹ = 12,000 ₹
पूंजीगत लाभ = विक्रय मूल्य–प्रारम्भिक लागत = 21,000₹ –16,000रू. = 5,000 ₹
आगमगत लाभ = प्रारम्भिक लागत – अपलिखित मूल्य =16,000₹ – 9,000₹ = 7,000 ₹
यदि उक्त सम्पत्ति का विक्रय 9000 ₹ से अधिक परन्तु 16,000 ₹ से कम पर होता है तो अन्तर की सारी राशि आगमगत लाभ मानी जाती है। इसके विपरीत यदि विक्रय 9,000 ₹ से कम पर होता है तो अपलिखित मूल्य तथा वसूली मूल्य का अन्तर आगमगत हानि माना जाता है।
यदि स्थायी सम्पत्ति का विक्रय किसी लेखावधि के मध्य में हुआ हो तो विक्रय की तिथि पर सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य ज्ञात करने के लिए वर्ष के प्रारम्भ से विक्रय की तिथि तक का ह्रास भी सम्पत्ति के प्रारम्भिक शेष में से कम किया जाना चाहिए।

जर्नल प्रविष्टियॉ (Journal Entries)

(i) सम्पत्ति के विक्रय पर (For Sale of Assets) :
Cash/ Bank/Purchaser"s Personal A/c Dr.

To Respective Fixed Assets A/c
(Being Respective Fixed Assets sold)

(ii) यदि ह्रास का लेंखांकन द्वितीय पद्वति से किया गया है तो निर्मित ह्रास प्रावधान खाते को सम्बन्धित सम्पत्ति खातें मे हस्तान्तरित करने के लिए (For transfer of provision for depreciation accounts to Respective Assets account) :
Provision for Depreciation A/c Dr.
To Assets Disposal A/c
(Being Provision for depreciation related to Respective Assets sold transferred to concerned assets account)

(iii) विक्रय की तिथी तक का ह्रास लगाने पर (For charging of depreciation up to the date of sale) :
Depreciation A/c Dr.
To Assets Disposal A/c
(Being depreciation up to the date of sale written off)

इस प्रविष्टि की आवश्यकता तभी होगी जब किसी सम्पत्ति का विक्रय उसके उपयोगी जीवन की अवधि व्यतीत होने से पूर्व ही करना पड़े। यदि सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त हो चुका हो तो उसके संम्बन्ध में निर्धारित ह्रास पूर्णतया

अपलिखित करने के उपरान्त सम्पत्ति खाते का शेष पूर्व में अनुमानित अवशिष्ट मूल्य के बराबर ही रहेगा। अतः विक्रय के समय ह्रास की प्रविष्टि करने की आवश्यकता नही रहेगी।

(iv) विक्रय पर हानि का हस्तान्तरण (For transfer of loss on sale of Assets) :
Loss on sale of Asset OR P&L A/c Dr.
To Respective Assets. A/c
(Being Loss on sale of assets transferred)

(v) विक्रय पर लाभ का हस्तान्तरण (For transfer of Profit on sale of Assets) :
Asset A/c Dr. (Selling Price – Written down value of assets)
To Capital Reserve. A/c (Excess of selling price over original cost)
To Profit on Sale Or P&L A/c (Original Cost – Written down book Value)
(Being profit on sale of asset transferred)

स्थायी सम्पत्ति विक्रय खाता (Fixed Assets Disposal Account)

जब सम्पत्ति खाता किसी एक ही इकाई का हिसाब दर्शाता हो तो विक्रय से संम्बन्धित प्रविष्टियां उसी खाते में की जा सकती है। परन्तु एक प्रकृति की कई इकाइयों के लिए एक खाता ही खोला गया हो तो सम्पत्ति की किसी एक इकाई के विक्रय पर एक पृथक सम्पत्ति विक्रय खाता खोलना अधिक सुविधाजनक रहता है। जब पृथक सम्पति विक्रय खाता खोला जाता है तो विक्रय पर की जाने वाली विभिन्न प्रविष्टियॉ सम्पत्ति खाते के स्थान पर सम्पत्ति विक्रय खाते में की जावेगी।
इस सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टियां इस प्रकार की जाती हे–

(i) बेची गई सम्पत्ति के पुस्तक मूल्य का हस्तान्तरण करने पर (For transfer of book value of assets sold) :
Assets Disposal A/c Dr.
To Respective Fixed Assets A/c
(Being book value of Respective Fixed asset transferred)

(ii) यदि ह्रास का लेखांकन द्वितीय पद्वति के अनुसार किया गया हो तो बेची गई सम्पत्ति से सम्बन्धित ह्रास के प्रावधान को हस्तान्तरित करने के लिए (For transfer of Provision for depreciation on Respective Fixed Assets sold account under second method) :
Provision for Depreciation A/c Dr.
To Assets Disposal A/c
(Being amount of provision for depreciation related to Respective Fixed assets sold, transferred)

(iii) सम्पत्ति का विक्रय करने पर (For Sale of Assets) :
Cash/ Bank/Purchaser"s Personal A/c Dr.
To Assets Disposal A/c
(Being selling price credited to Respective Fixed Assets Disposal Account)

(iv) विक्रय की तिथी तक का ह्रास लगाने पर (For Charging of depreciation up to the date of sale) :
Depreciation A/c Dr.
To Respective Fixed Assets Disposal A/c
(Being Current Year"s Depreciation charged up to the date of sale)

(v) विक्रय पर हानि होने पर (For loss on sale of assets) :
Loss on sale of Respective Fixed Assets Or P & L A/c Dr.
To Respective Fixed Assets Disposal A/c
(Being Loss transferred)

(vi) सम्बन्धित सम्पत्ति के विक्रय पर लाभ होने पर (For Profit on sale of Respective Fixed Assets) :
Respective Fixed Assets Disposal A/c Dr. (Excess of Cr. Over Dr. side of Respective Fixed Asset Disposal A/c)
To Capital Reserve A/c (Excess (if any) of selling price over original cost)
To Profit on sale or P&L A/c (Original Cost – Written down book value)
(Being profit on sale of Respective fixed asset transferred)

मूल्य ह्रास के निर्धारण की विभिन्न पद्वतियां (Methods of Charging Depreciation)

1. स्थायी प्रभाग पद्वति (Fixed Instalment Method)
2. क्रमागत ह्रास पद्वति (Diminishing Balance Method)

स्थायी प्रभाग पद्वति (Fixed Instalment Method)

इस पद्वति में यह माना जाता है कि सम्पत्ति का व्यवसाय में उसके पूरे जीवन काल में एक समान महत्व रहता है। इसलिए इस विधि में प्रत्येक वर्ष एक समान राशि मूल्य ह्रास के रूप मे अपलिखित की जाती है। इस कारण इस विधि से लगने वाले ह्रास को ग्राफ पेपर पर अंकित करने पर एक सीधी रेखा बनती है जो इस प्रकार है–

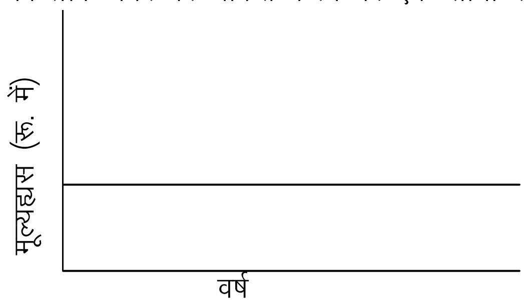

इसी कारण इस पद्वति का नाम स्थायी प्रभाग अथवा सरल रेखा पद्वति पड़ा है। प्रत्येक वर्ष के मूल्य ह्रास की गणना, सम्पत्ति की लागत (Cost price of Asset) में से उसका अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value) (यदि कुछ हो तो) घटाने के बाद शेष राशि में उस सम्पत्ति के उपयोगी जीवन काल का भाग देकर की जाती है। सम्पत्ति की मूल लागत में उसको स्थापित करने के व्यय तथा पुरानी सम्पत्ति की दशा में उसे काम में लाने योग्य बनाने के लिए मरम्मत पर किये जाने वाले व्यय भी शामिल होते है। सूत्र के रूप में, –

$$\text{मूल्य ह्रास (Depreciation)} = \frac{\text{सम्पत्ति का मूल्य – अवशिष्ट मूल्य (Cost of Asset – Scrap Value)}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवन काल वर्षो में (Estimated Life of asset in years)}}$$

यह मूल्यह्रास की राशि के निर्धारण की एक सरलतम विधि है तथा एक बार मूल्यह्रास की राशि निर्धारित होने के बाद प्रति वर्ष वही राशि अपलिखित की जाती हैं इसमें सम्पत्ति को लागत मूल्य अथवा अवशिष्ट मूल्य (अगर कोई हो) तक अपलिखित किया जाता हे।

कुछ विद्वान इस विधि के प्रयोग को इस दृष्टि से दोषपूर्ण मानते है कि ज्यो ज्यो मशीन पुरानी होती जाती है उस पर होने वाला मरम्मत का व्यय बढता जाता है जिससे आने वाले वर्षो में ह्रास तथा मरम्मत व्यय का भार तो बढता जाता है जबकि मशीन की उत्पादन क्षमता उत्तरोत्तर कम होती चली जाती हैं। इस पद्वति में सम्पत्ति में विनियोजित राशि पर ब्याज का लेखांकन भी नहीं होता है। इस विधि का प्रयोग उन व्यापारियों के लिए उपयुक्त है जिनके यहाँ सम्पत्तियों पर व्यय कम होता है अथवा जिन सम्पत्तियो पर मरम्मत व नवीनीकरण पर कम व्यय करना पड़ता है। यह प्रणाली उन सम्पत्तियों के लिए विशेष उपयुक्त रहती है जिनकी आयु का निर्धारण स्पष्ट रूप से किया जा सके जैसे पट्टे पर प्राप्त सम्पत्ति (Leasehold Property) जलयानों तथा विशेष किस्म के मकानों पर भी यह पद्वति लागू की जा सकती है क्योंकि सुरक्षात्मक सतक्रता की दृष्टि से एक निश्चित अवधि बीतने पर जलयानों को समुद्री यात्रा योग्य तथा मकानों को निवास योग्य नहीं माना जाता चाहे वे जर्जर न भी हुए हों ।

2. क्रमागत ह्रास पद्वति (Diminishing Balance or Reducing Balance or written Down value Method)

इस पद्वति के अन्तर्गत ह्रास की राशि प्रति वर्ष पिछले वर्ष की तुलना मे कम होती जाती है । प्रथम वर्ष में सम्पत्ति के उपयोग के समयानुसार पुस्तक मूल्य पर एक निश्चित प्रतिशत के आधार पर मूल्यह्रास निकाला जाता है। यह कार्य तब तक चलता रहता है जब तक सम्पत्ति का उपयोगी जीवन समाप्त नहीं हो जाता। इस विधि के अन्तर्गत किसी भी सम्पत्ति का मूल्य शून्य तक नही पहुच सकता। यह विधि अधिक वैज्ञानिक एवं उचित है क्योकि इस विधि के अन्तर्गत ह्रास की राशि कम होती जाती है तथा मरम्मत व्यय की राशि बढते रहने के कारण प्रत्येक वर्ष लाभ हानि खाते पर समान भार पड़ता है। इस विधि में लगने वाले ह्रास को ग्राफ पेपर पर अंकित करने पर एक तिरछी रेखा प्राप्त होती है जो बायी तरफ से दायी तरफ की और जाती है जो बताती है कि ह्रास की राशि प्रति वर्ष घट रही है जो इस प्रकार है–

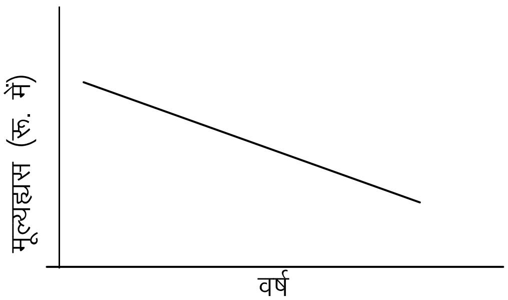

इस विधि मे वर्ष के मध्य मे सम्पत्ति में वृद्धि व विस्तार होने पर यदि वृद्धि की तिथि न दी हो तो ह्रास की गणना करना सरल रहता है क्योकि लेखा अवधि की अन्तिम तिथि को स्थित सम्पत्तियों के पुस्तक मूल्य पर निर्धारित दर से गणना की जा सकती है परन्तु उपरोक्त प्रकार से वृद्धि या नई सम्पत्ति के क्रय की तिथि ज्ञात हो तो वृद्धि के सम्बन्ध में उस वर्ष के उतने भाग का ही ह्रास लिखना उचित होगा जितने समय सम्पत्ति का प्रयोग किया गया है।

कुछ विद्वानों के मत में यह विधि भी पूर्णतः दोष मुक्त नहीं है। इस विधि मे भी सम्पत्ति में विनियोजित पूंजी पर ब्याज का ध्यान नहीं रखा जाता है तथा मूल्यह्रास की उपयुक्त दर की गणना करना भी कठिन हो जाता है फिर भी यह विधि मशीनों, पूर्जे, औजार आदि का मूल्यह्रास अपलिखित करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है।

स्थायी किस्त विधि एवं क्रमागत ह्रास विधि में अन्तर

क्रम संख्या	स्थाई किस्त विधि	क्रमागत ह्रास विधि
1.	इस विधि मे ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष समान रहती है।	इस विधि मे ह्रास की राशि प्रत्येक वर्ष में घटती रहती है।
2.	इस विधि मे सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य शून्य हो सकता है।	इस विधि में सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य कभी भी शून्य नहीं होगा, चाहे दर कुछ भी क्यों न हो।
3	इस विधि में मूल्यह्रास एवं मरम्मत व्यय को मिलाकर लाभ हानि खाते पर प्रभाव, प्रतिवर्ष क्रमागत विधि की अपेक्षा अधिक पड़ता है।	इस विधि मे मूल्यह्रास एवं मरम्मत व्यय का संयुक्त प्रभाव लाभ हानि खाते पर प्रति वर्ष प्रथम विधि की अपेक्षा कम पड़ता है।
4	यदि सम्पत्ति को अपलिखित करने का समय दोनों विधियों में समान है तो इस विधि मे ह्रास की दर कम रहती है।	इस विधि में उतने ही समय में सम्पत्ति को अपलिखित करने के लिए अधिक ऊंची ह्रास की दर की आवश्यकता होती है।
5	इस विधि में चिट्ठे में सम्पत्ति को मूल्यह्रास घटाने के बाद दर्शाने पर दूसरी विधि के मुकाबले कम मूल्य पर दर्शाया जाता है।	इस विधि में भी सम्पत्ति प्रत्येक वर्ष घटती हुई रकम से दर्शायी जाती हैं लेकिन प्रथम विधि के मुकाबले चिट्ठे मे अधिक मूल्य पर दिखाया जाता है।

(1) मूल्य ह्रास की दर निकालना (Calculation of rate of depreciation) :

स्थायी किस्त पद्वति के अन्तर्गत प्रतिवर्ष मूल्यह्रास का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित सूत्र दिया गया है :–

$$\text{प्रति वर्ष मूल्य ह्रास} = \frac{\text{(लागत–अवशिष्ट मूल्य)}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवनकाल}}$$

उदाहरण (Illustration) 1 राम एण्ड सन्स ने 3,00,000 रू. में एक मशीन 01.04.2010 को खरीदी जिसका अनुमानित जीवन काल 5 वर्ष हैं । पॉचवें वर्ष के अन्त में इसका अवशिष्ट मूल्य 50,000 रू. होगा। लाभ हानि खाते में प्रति वर्ष लिखी जाने वाली ह्रास की राशि ज्ञात कीजिये तथा प्रति वर्ष लगायी जाने वाली ह्रास की दर भी ज्ञात कीजिये जिससे ह्रास लगाया जायेगा ।

(Ram & Sons purchased a Machinery on 01.04.2010 for ₹ 3,00,000 whose life was expected to be 5 Years. Its estimated scrap value at the end of fifth year will be ₹ 50,000. Find the amount of depreciation to be charged to P&L account every year. Also calculate the rate on which depreciation is to be charged every year.)

हल (Solution) :

$$\text{Amount of depreciation per year} = \frac{\text{Cost – Scrap Value}}{\text{Estimated life of machine}}$$

$$= \frac{₹\ 3,00,000 - ₹\ 50,000}{5 \text{ Years}} \text{ or } ₹\ 50,000$$

$$\text{Rate of depreciation} = \frac{\text{Depreciation per year}}{\text{Total Cost of Machine}} \times 100$$

$$\text{Rate of depreciation} = \frac{₹\ 50,000}{₹\ 3,00,000} \times 100 \text{ OR } 16\ 2/3\ \%$$

उदाहरण (Illustration) 2 मनु एण्ड कम्पनी ने 1 अप्रेल 2008 को 38,000 ₹ की लागत का एक कम्प्यूटर खरीदा तथा 2,000 ₹ उसकी स्थापना पर व्यय किये । कम्प्यूटर का उपयोगी जीवन काल 3 वर्ष अनुमानित किया गया तथा तीन वर्ष बाद उसका अवशेष मूल्य 10,000 ₹ होगा । दूसरे वर्ष के अन्त में उस कम्प्यूटर को 15,000 ₹ में बेच दिया गया । खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द किये जाते है । स्थायी किस्त पद्धति से ह्रास की राशि व मूल्य ह्रास दर की गणना करते हुए 2 वर्षो के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये जब (i) ह्रास को सम्पत्ति खाते में अपलिखित किया जाये अथवा (ii) जब पृथक् ह्रास प्रावधान खाता रखा जाये ।

(Manu & Co. purchased a computer on 1st April, 2008 costing ₹ 38,0000 and spend ₹ 2,000 on its installation. Computer"s useful life has been estimated 3 years and its scrap value will be ₹ 10,000 after 3 years. At the end of second year the computer has been sold for ₹ 15,000. Accounts are closed on 31st March of each year. Calculate the amount of depreciation and rate of depreciation under fixed installment method and give Journal entries when (i) Depreciation is written off in assets account or (ii) Separate provision for Depreciation account is maintained.)

हल (Solution) : प्रतिवर्ष अपलिखित की जाने वाली ह्रास की राशि की गणना इस प्रकार होगी :

$$\text{सुत्र = मूल्य ह्रास की राशि} = \frac{\text{मूल लागत – अवशेष मूल्य}}{\text{सम्पत्ति का अनुमानित जीवन काल}}$$

$$= \frac{(38,000 + 2,000 - 10,000)\ ₹}{3} \text{ या } \frac{(40,000 - 10,000)\ ₹}{3} = 10,000\ ₹ \text{ प्रतिवर्ष}$$

$$\text{मूल्य ह्रास की दर} = \frac{\text{वार्षिक ह्रास की राशि}}{\text{कुल मूल लागत}} \times 100 \qquad \frac{10,000\ ₹}{40,000\ ₹} \times 100 = 25\%$$

प्रथम विधि – जब ह्रास की राशि सम्पत्ति खातें में अपलिखित की जाये

Journal

2008			₹	₹
Apr. 1	Computer A/c Dr. To Bank A/c (Being Computer purchased)		38,000	38,000
"	Computer A/c Dr. To Cash A/c (Being payment of installation charges)		2,000	2,000
2009	Depreciation A/c Dr.		10,000	

Mar. 31	To Computer A/c (Being annual depreciation charged)			10,000
”	P & L A/c Dr. To Depreciation A/c (Being depreciation transferred to P&L account)		10,000	10,000
2010 Mar. 31	Depreciation A/c Dr. To Computer A/c (Being annual depreication charged)		10,000	10,000
”	P&L A/c Dr. To Depreciation A/c (Being depreciation transferred to P&L account)		10,000	10,000
”	Bank A/c Dr. To Computer A/c (Being amount realized from sale of old computer)		15,000	15,000
”	P&L A/c Dr. To Computer A/c (Being loss on sale of computer transferred to P&L account)		5,000	5,000

द्वितीय विधि – जब पृथक ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाये :

Journal

2008			₹	₹
Apr. 1	Computer A/c Dr. To Bank A/c (Being Computer purchased)		38,000	38,000
”	Computer A/c Dr. To Cash A/c (Being payment of installation charges)		2,000	2,000
2009 Mar. 31	P & L A/c Dr. To Provision for Depreciation A/c (Being provision made for annual depreciation)		10,000	10,000
2010 Mar. 31	P & L A/c Dr. To Provision for Depreciation A/c (Being provision made for annual depreciation)		10,000	10,000
”	Bank A/c Dr. To Computer A/c (Being amount realized from sale of old Computer)		15,000	15,000
2010 Mar. 31	Provision for Depreciation A/c Dr. To Computer A/c (Being provision for depreciation account transferred to Computer account)		20,000	20,000
”	P&L A/c Dr. To Computer A/c (Being loss on sale of computer transferred to P&L account)		5,000	5,000

उदाहरण (Illustration) 3 श्याम ने एक मशीन 1,20,000 ₹ में 1.7.2008 को खरीदी। मशीन पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर स्थायी किस्त पद्वति से ह्रास लगाया जाता है मशीन को 1.07.2010 को 1,00,000 ₹ में बेच दिया। यदि पुस्तकें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द की जाती हो तो मशीन खाता बनाइये।

(A machine was purchased by Shyam for ₹ 1,20,000 on 01.07.2008. The machine is depreciated @ 10% per annum on straight line method. The machine was sold on 01.07.2010 for ₹ 1,00,000. You are required to prepare machinery Account , if the books are closed on 31st December every year.)

हल (Solution) :

Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2008 01.07	To Bank A/c		1,20,000	2008 31.12	By Depreciation A/c By Balance c/d		6,000 1,14,000
			1,20,000				1,20,000
2009 1.1	To Balance b/d		1,14,000	2009 31.12	By Depreciation A/c By Balance c/d		12,000 1,02,000
			1,14,000				1,14,000
2010 1.1 1.7	To Balance b/d To Profit and Loss A/c (Profit on Sale of Machine)		1,02,000 4,000	2010 1.7 1.7	By Bank A/c By Depreciation A/c (Depreciation for 6 Month)		1,00,000 6,000
			1,06,000				1,06,000

उदाहरण (Illustration) 4 कृष्ण ने एक मशीन 1 मार्च 2008 को 3,50,000 ₹ मे खरीदी तथा उसे स्थापित करने पर 10,000 ₹ व्यय किये। 1 मई 2009 को उसने 1,50,000 ₹ की एक ओर मशीन खरीदी। 1 अप्रेल 2010 को जो मशीन 1 मार्च 2008 को खरीदी थी उसे 2,50,000 ₹ में बेच दिया तथा 1 जून 2010 को एक अन्य मशीन 6,00,000 ₹ मे खरीदी। श्री कृष्ण नें तीनों मशीनों पर क्रमश 10 प्रतिशत, 20 प्रतिशत, तथा 30 प्रतिशत मूल्यह्रास स्थायी किस्त पद्वति से लगाया। वर्ष 2007–08 से 2010–11 तक मशीन खाता यह मानते हुए बनाइये कि पुस्तकें प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द की जाती है। (Krishna purchased a machine for ₹ 3,50,000 on 1st March 2008. On 1st May 2009 he had purchased another machine for ₹ 1,50,000. On 1st April 2010 the machine which was purchased on 1st March 2008 was sold for ₹ 2,50,000 and on 1st June 2010 he had purchased another machine for ₹ 6,00,000. Krishna had charged depreciation @ 10%,20% and 30% p.a. respectively on SLM all the three machines. Prepare Machinery account from 2007-08 to 2010-11 assuming that accounts are closed on 31st March every year)

हल (Solution)

Dr. Machinery Account Cr.

Date	Particular	J.F.	Amount ₹	Date	Particular	J.F.	Amount ₹
2008 01.03	To Bank A/c (₹3,50,000 + ₹ 10,000)		Rs. 3,60,000	2008 31.03	By Depreciation A/c By Balance c/d		Rs. 3,000 3,57,000
			3,60,000				3,60,000
2008 1.4	To Balance b/d		3,57,000	2009 31.03	By Depreciation A/c By Balance c/d		36,000 3,21,000
			3,57,000				3,57,000
2009 1.4	To Balance b/d		3,21,000	2010 31.03	By Depreciation A/c		63,500

1.5	To Bank A/c		1,50,000	1.7	(₹ 36,000 + ₹ 27,500) By Balance c/d		4,07,500
			4,71,000				4,71,000
2010				2010			
1.4	To Balance b/d		4,07,500	1.4	By Bank		2,50,000
1.6	To Bank A/c		6,00,000	1.4	By Profit and Loss A/c		35,000
				2011 31.3.	By Depreciation (₹ 30,0000 + ₹ 1,50,000)		1,80,000
				31.3.	By Balance c/d		5,42,500
			10,07,500				10,07,500

उदाहरण (Illustration) 5 ललित ने 1 अक्टूबर 2007 को एक मशीन 40,000 ₹ में आयात की । 12,000 ₹ आयात शुल्क, 5,000 ₹ भाड़ा चुकाया तथा 3,000 ₹ उसकी स्थापना पर व्यय किये । दूसरी स्थानीय मशीन 1 अप्रेल 2008 को 20,000 ₹ में क्रय की गई । 1 अक्टुबर 2009 को आयातित मशीनरी का एक तिहाई भाग अनुपयुक्त हो गया जिसे 8,400 ₹ में बेच दिया गया । इसे प्रतिस्थापन हेतु दूसरी मशीन 10,000 ₹ में उसी दिन क्रय की गई । ह्रास की गणना मूल लागत पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से की जाती है । प्रतिवर्ष 31 मार्च को खाते बन्द करते हुए प्रथम तीन वर्षों के लिए खाते बनाईये – (i) जब कि ह्रास को सम्पत्ति खातें में अपलिखित किया जाता है तथा (ii) जब पृथक् ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है ।

Lalit imported a machine on 1st October, 2007 for ₹ 40,000, paid customs duty ₹ 12,000, freight ₹ 5,000 and incurred installation charges ₹ 3,000. Another local machine costing ₹ 20,000 was purchased on 1st April, 2008. On 1st October, 2009, one third portion of the imported machine got out of order and was sold for ₹ 8,400. Another machine was purchased to replace the same for ₹ 10,000. Depreciation is to be provided @ 10% per annum on the original cost. Closing the books on 31st March of each year, prepare ledger account for three years : (i) When depreciation is written off in the machine account and (ii) when separate provision for depreciation account is maintained.

हल (Solution) :

Machinery Account

Dr. Cr.

2007			Rs.	2008			Rs.
Oct.1	To Bank A/c		40,000	Mar. 31	By Depreciation A/c (Rs. 60,000 x 10% x 6/12		3,000
Oct. 1	To Bank A/c (Custom Duty Freight & Installation)		20,000	"	By Balance c/d		57,000
			60,000				60,000
2008				2009			
Apr.1	To Balance b/d		57,000	Mar. 31	By Depreciation A/c (10% on Rs. 60,000 + Rs. 20,000)		8,000
”	To Bank A/c		20,000	"	By Balance c/d		69,000
			77,000				77,000
2009				2009			
Apr. 1	To Balance b/d		69,000	Oct.1	By Bank A/c		8,400
Oct.1	To Bank A/c		10,000	Oct. 1	By Depreciation A/c		1,000
				”	By P & L A/c		7,600[1]
				2010 Mar. 31	By Depreciation A/c		6,500[2]
				”	By Balance c/d		55,500
			79,000				79,000
2010							
Apri.1	To Balance b/d		55,500				

Depreciation Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
2008 Mar.31	To Machinery A/c		3,000	2008 Mar. 31	By P & L A/c		3,000
2009 Mar.31	To Machinery A/c		8,000	2009 Mar. 31	By P & L A/c		8,000
2009 Oct. 1	To Machineery A/c		1,000				
2010 Mar. 31	To Machinery A/c		6,500	2010 Mar. 31	By P & L A/c		7,500
			7,500				7,500

Working Note : 1. Loss on Sale of Machinery:-

		₹
2007 Oct. 1	Cost of (1/3 x Rs. 60,000) Imported Machinery (out of order)	20,000
2008 Mar.31	Less : Depreciation (for 6 months @ 10%)	1,000
		19,000
2009 Mar.31	Less : Depreciation (for the year @ 10%)	2,000
		17,000
2009 Oct. 1	Less : Depreciation @ 10% for 6 months on Rs. 20,000	1,000
	W.D.V. on 1.10.2009	16,000
2009 Oct. 1	Less : Sale Proceeds	8,400
	Loss on sale of Machinery	7,600

2. Depreciation for the year ending 31st March, 2010:-

	₹
On ₹ 40,000 for one year @ 10%	4,000
On ₹ 20,000 for one year @ 10%	2,000
On ₹ 10,000 for 6 months @ 10%	500
	6,500

1. जब ह्रास के लिए पृथक् ह्रास प्रावधान खाता बनाया जाता है :

Machinery Account

Dr. Cr.

			₹				₹
2007 Oct.1	To Bank A/c		40,000	2008 Mar. 31	By Balance c/d		60,000
Oct. 1	To Bank A/c (Expenses)		20,000				
			60,000				60,000
2008 Apr.1	To Balance b/d		60,000	2009 Mar. 31	By Balance c/d		80,000
”	To Bank A/c		20,000				
			80,000				80,000
2009 Apr. 1	To Balance b/d		80,000	2009 Oct.1	By Bank A/c		8,400
Oct.1	To Bank A/c		10,000	Oct. 1	By Provision for Depreciation A/c		4,000
				”	By P & L A/c		7,600
				2010 Mar. 31	By Balance c/d		70,000
			90,000				90,000

2010 Apri.1	To Balance b/d		70,000				

Provision for Depreciation Account

Dr. Cr.

Date	Particulars		₹	Date	Particulars		₹
2008 Mar.31	To Balance c/d		3,000	2008 Mar. 31	By P & L A/c		3,000
2009 Mar.31	To Balance c/d		11,000	2008 Apr.1	By Balance b/d		3,000
				2009 Mar. 31	By P & L A/c		8,000
			11,000				11,000
2009 Oct. 1	To Machinery A/c		4,000	2009 Apr. 1	By Balance b/d		11,000
2010 Mar.31	To Balance c/d		14,500	Oct. 1	By P & L A/c		1,000
				2010 Mar. 31	By P & L A/c		6,500
			18,500				18,500
				2010 Apr. 1	By Balance b/d		14,500

(2) ह्रास की गणना में समयावधि का महत्व

मूलतः ह्रास की गणना एक निश्चित समयावधि के आधार पर की जाती है। जब दर के साथ वार्षिक शब्द जुड़े हुए हो और सम्पत्ति के क्रय की तिथियॉ दी गई हो तो गणना में कोई कठिनाई नही होती क्योकि वर्ष के मध्य कोई सम्पत्ति खरीदी जाए तो ह्रास की गणना क्रय की तिथि से लेकर बहियॉ बद होने की तिथि तक की अवधि के लिए की जावेगी। इसी प्रकार कोई सम्पत्ति वर्ष के मध्य बेच दी जाए या प्रयोग से हटा दी जाए तो भी ह्रास की गणना वर्ष के प्रारम्भ से उक्त विक्रय या हटाने की तिथि तक की जावेगी। यदि सम्पत्ति के क्रय विक्रय की तिथि की जानकारी उपलब्ध न हो तो निम्नलिखित में से कोई एक मान्यता ली जा सकती है :

(i) क्रय विक्रय वर्ष के प्रारम्भ मे ही कर लिया गया।
(ii) क्रय विक्रय वर्ष के अन्त मे किया गया।
(iii) क्रय विक्रय वर्ष के ठीक मध्य मे किया गया।
(iv) जिस वर्ष मे क्रय किया जाए उस वर्ष के लिए पूरे वर्ष का ह्रास लगा दिया जाए तथा जिस वर्ष मे विक्रय किया जाए उस वर्ष के लिए ह्रास का लेखा न किया जाय।

उपरोक्त सभी अवस्थाओ में किसी वर्ष के लिए ह्रास की गणना उक्त सम्पत्ति के उपयोग की अवधि को ध्यान मे रखकर की जावेगी यदि सम्पत्ति पूरे वर्ष भर व्यापार मे बनी रही तो पूरे वर्ष का ह्रास लिखा जायेगा। इसके विपरीत यदि ह्रास की दर के साथ वार्षिक शब्द का प्रयोग न किया गया हो तो ह्रास की गणना में समय अवधि का निर्धारण करते समय निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए—

(i) जब सम्पत्ति के क्रय विक्रय की तिथी ज्ञात हो तो उस वर्ष उतनी ही अवधि का ह्रास लिखा जावेगा जितने समय सम्पत्ति का प्रयोग किया गया हो ।

(ii) जब ह्रास की स्थायी प्रभाग पद्वति प्रयुक्त की जाती है तो भी ह्रास की गणना उतनी अवधि के लिए ही की जावेगी जितने समय तक सम्पत्ति का व्यापर में प्रयोग किया गया हो। यदि क्रय विक्रय की निश्चित तिथी ज्ञात न हो तो क्रय विक्रय तिथि के संबंध में उपरोक्त चारो मान्यताओ में से कोई एक मान्यता मान कर गणना की जा सकती है।

(iii) जब ह्रास की क्रमागत पद्वति प्रयुक्त की जाती हो तथा सम्पत्ति के क्रय विक्रय की तिथि न दी गई हो तो वर्ष की अन्तिम तिथि को विद्यमान सम्पत्तियो पर निर्धारित दर से ह्रास की गणना पूरे वर्ष के लिए की जानी चाहिए।

उदाहरण (IIlustration) :6- अप्रेल 2008 को कॉफी हाउस द्वारा कुछ स्थायी सम्पत्तियॉ 3,40,000 ₹ की लागत से खरीद कर 10,000 ₹ की लागत पर स्थापित की गई थी। ह्रास की दर 10 प्रतिशत वार्षिक है। 1 जुलाई 2008 को कुछ

और सम्पत्तियाँ 50,000 ₹ की लागत से लगाई गई। फर्म द्वारा 1 जनवरी 2010 को कुछ और सम्पत्तियाँ भी 1,00,000 ₹ की लागत से लगाई।

31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले तीन वर्षो के लिए सम्पत्ति खाता दिखाइये यदि

(i) फर्म द्वारा ह्रास की स्थाई किश्त पद्वति का उपयोग किया जाता है।

(ii) फर्म द्वारा ह्रास की घटती हुई शेष पद्वति का उपयोग किया जाता है।

On 1st April 2008 some fixed Assets were purchased by Coffee House at a cost of ₹ 3,40,000 and were installed at a cost of ₹ 10,000. The agreed rate of depreciation is 10% Per annum. Some more assets were installed on 1st July 2008 at a cost of ₹ 50,000. The firm again installed some more assets on 1st January 2010 at a cost of ₹ 1,00,000.

Prepare the asset account for three years on 31st March,2011 if :

(i) The firm uses the fixed instalment method of depreciation.

(ii) The firm uses the Diminishing balance method of depreciation.

हल **(Solution): (i) Fixed Instalment Method**

Fixed Assets Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount ₹	Date	Particulars	JF	Amount ₹
2008			₹	2009			₹
April , 1	To Cash A/c		3,50,000	Mar., 31	By Depreciation A/c Rs.		
July, 1	To Cash A/c		50,000		I Purchase 35,000		
					II Purchase 3,750		38,750
				Mar., 31	By Balance c/d		3,61,250
			4,00,000				4,00,000
2009				2010			
April , 1	To Balance b/d		3,61,250	Mar., 31	By Depreciation A/c Rs.		
2010					Old Property 40,000		
Jan., 1	To Cash A/c		1,00,000		New Property 2,500		42,500
					By Balance c/d		4,18,750
				Mar., 31			
			4,61,250				4,61,250
2010				2011			
April , 1	To Balance b/d		4,18,750	Mar., 31	By Depreciation A/c		50,000
					By Balance c/d		3,68,750
			4,18,750				4,18,750
2011							
April , 1	To Balance b/d		3,68,750				

Diminishing Balance Method :

Fixed Assets Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount Rs.	Date	Particulars	JF	Amount Rs.

2008			2009		
April , 1	To Cash A/c	3,50,000	Mar., 31	By Depreciation A/c Rs.	
July. 1	To Cash A/c	50,000		I Purchase 35,000	
				II Purchase 3,750	38,750
			Mar., 31	By Balance c/d	3,61,250
		4,00,000			4,00,000
2009			2010		
April , 1	To Balance b/d	3,61,250	Mar., 31	By Depreciation A/c Rs.	
2010				Old Property 36,125	
Jan., 1	To Cash A/c	1,00,000		New Property 2,500	38,625
			Mar., 31	By Balance c/d	4,22,625
		4,61,250			4,61,250
2010			2011		
April , 1	To Balance b/d	4,22,625	Mar., 31	By Depreciation A/c	42,262.50
				By Balance c/d	3,80,362.50
		4,22,625			4,22,625.00
2011	To Balance b/d				
April , 1		3,80,362.50			

उदाहरण (Ill ustraation) 7 शंकर एण्ड संन्स ने हरी ब्रदर्स से 01.04.2006 को एक मशीन 1,50,000 ₹ मे किस्तो मे खरीदी । इसका अनुमानित जीवनकाल 5 वर्ष है। इसका भुगतान पॉच समान किस्तों मे होना था। 1 अप्रेल 2006 को व्यापारी ने 15,000 ₹ मशीन को स्थापित करने पर खर्च किये तथा 7,000 ₹ मशीन के वार्षिक बीमा प्रीमियम के चुकाये। मूल्यह्रास सीधी रेखा पद्वति से लगाया। यह अनुमान लगाया गया कि उपयोगी जीवनकाल समाप्त होने पर मशीन का अवशेष मूल्य 50,000 ₹ होगा तथा मशीन को हटाने की लागत 5,000 ₹ लगेगी। 31.10.2010 को मशीन आग लगने से नष्ट हो गई तथा बीमा कम्पनी ने 40,000 ₹ का दावा स्वीकार किया। मशीन खाता, ह्रास प्रावधान खाता तथा मशीन निस्तारण खाता यह मानते हुए बनाइये कि व्यापारी अपने खाते प्रतिवर्ष 31 मार्च को बन्द करता है। (On 1st April 2006 Shanker & Sons purchased a machinery from Hari Bros. Costing ₹ 1,50,000 on instalment basis payable in five equal instalments and its estimated life is five years. On 01.04.2006 trader spent ₹ 15,000 on installation of machinery and ₹ 7,000 as annual premium for insurance of the machinery. The depreciation was provided on straight line method. It was estimated that at the end of the useful life, realizable value of machinery would be ₹ 50,000 and estimated dismantling cost to be paid by traders will be ₹ 5000. The machinery was destroyed by Fire on 31.10.2010 and an insurance claim of ₹ 40,000 was admitted by the insurance company. Prepare Machinery Account, Provision for depreciation Account and Machinery disposal Account assuming that the trader closed its books on 31st March Every Year.)

हल (Solution) : Calculation of annual depreciation :

$$\text{Depreciation per annum} = \frac{\text{Cost + Installation Charges – Scrap Value + Dismantling Cost}}{\text{Estimated useful life of Machinery}}$$

$$= \frac{₹\ (150000 + 15000 - 50000 + 5000)}{5} \text{ or } ₹\ 24,000$$

Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2006			₹	2007			₹
01.04	To Hari Bros A/c		1,50,000	31.12	By Balance c/d		1,65,000
01.04	To Cash A/c		15,000				
			1,65,000				1,65,000

2007 1.4	To Balance b/d		1,65,000	2008 31.03	By Balance c/d		1,65,000
			1,65,000				1,65,000
2008 1.4	To Balance b/d		1,65,000	2009 31.03	By Balance c/d		1,65,000
			1,65,000				1,65,000
2009 1.4	To Balance b/d		1,65,000	2010 31.03	By Balance c/d		1,65,000
			1,65,000				1,65,000
2010 1.4	To Balance b/d		1,65,000	2010 31.10	By Machinery Disposal A/c		1,65,000
			1,65,000				1,65,000

Provision for Depreciation Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2007 31.03	To Balace c/d		₹ 24,000	2007 31.03	By Depreciation A/c		₹ 24,000
			24,000				24,000
2008 31.03	 To Balace c/d		 48,000	2007 01.04 2008 31.03	 By Balance b/d By Depreciation A/c		 24,000 24,000
			48,000				48,000
2009 31.03	 To Balace c/d		 72,000	2008 01.04 2009 31.03	 By Balance b/d By Depreciation A/c		 48,000 24,000
			72,000				72,000
2010 31.03	 To Balace c/d		 96,000	2009 01.04 2010 31.03	 By Balance b/d By Depreciation A/c		 72,000 24,000
			96,000				96,000
2010 31.10	 To Machinery Disposal A/c		 1,10,000	2010 01.04 2010 31.10	 By Balance b/d By Depreciation A/c (For 7 Months)		 96,000 14,000
			1,10,000				1,10,000

Machinery Disposal Account

Dr. Cr.

Date	Particular	J.F.	Amount ₹	Date	Particulars	J.F.	Amount ₹
2007 31.03	To Machinery A/c		1,65,000	2010 31.10	By Provision for Depreciation A/c By Insurance Co. By Profit and Loss A/c		1,10,000 40,000 15,000
			1,65,000				1,65,000

उदाहरण (IIIustration) :8- मून लिमिटेड ने 01.04.2008 को एक संयत्र 10,00,000 ₹ मे खरीदा। 01.10.2008 को 5,00,000 ₹ का एक अतिरिक्त संयत्र खरीदा था। 01.10.2009 को वह संयत्र 4,00,000 ₹ में बेच दिया जिसे 01.04.2008 को खरीदा था। 01.10.2010 को एक नया संयत्र 12,00,000 ₹ में खरीदा तथा उसी दिन 01.10.2008 को खरीदा हुआ संयत्र 4,20,000 ₹ में बेंच दिया। ह्रास 10 प्रतिशत वार्षिक दर से अपलिखित मूल्य पर प्रतिवर्ष 31 मार्च को लगाया जाता है। 31 मार्च 2011 को समाप्त होने वाले तीन वर्षो का संयत्र खाता बनाइये।

On 01.04.2008 Moon Ltd. Purchased a Plant of ₹ 10,00,000. On 01.10.2008 an additional Plant was purchased Costing ₹ 5,00,000. On 01.10.2009 Plant purchased on 01.04.2008 was sold off for ₹ 4,00,000. On 01.10.2010 a new Plant was Purchased for ₹ 12,00,000 and the plant purchased on 01.10.2008 was sold for ₹ 4,20,000 on the same date. Depreciation is to be provided at 10% per annum on the Written down value on 31st March every year.

Prepare Plant Account for three Years ended 31.03.2011

हल (Solution):

Plant Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
2008			₹	2009			₹
01.04	To Bank A/c		10,00,000	31.03	By Depreciation A/c (Rs. 1,00,000 + Rs. 25,000)		1,25,000
01.10	To Bank A/c		5,00,000	31.03	By Balance c/d		13,75,000
			15,00,000				15,00,000
2009				2009			
01.04	To Balance b/d		13,75,000	01.10	By Bank A/c		4,00,000
					By Depreciation A/c		45,000
					By Profit & Loss A/c (As per working Note 1)		4,55,000
				2010			
				31.03	By Depreciation A/c		47,500
					By Balance c/d		4,27,500
			13,75,000				13,75,000
2010				2010			
01.04	To Balance b/d		4,27,500	01.10	By Bank A/c		4,20,000
01.10	To Bank A/c		12,00,000	2011	By Depreciation A/c		21,375
	To Profit & Loss A/c (As per W.No. 2)		13,875	31.03	By Depreciation A/c		60,000
				31.03	By Balance c/d		11,40,000
			16,41,375				16,41,375

<u>**कार्य की टिप्पणी :–(Working Note)**</u>

(1) 1 अप्रेल 2008 को खरीदे गये संयत्र के विक्रय पर हुए लाभ/हानि की गणना (Calculation of Profit / Loss on sale of Plant purchased on 01.04.2008)

	₹	₹
Cost on 01.04.2008		10,00,000
Less Depreciation written off :		
For 2008-09	1,00,000	
For 2009-10 (6 Month)	45,000	1,45,000
		8,55,000
Less : Sold		4,00,000
Loss on sale of Plant		4,55,000

(2) 1 अक्टूबर 2008 को खरीदे गये संयत्र के विक्रय पर हुए लाभ/हानि की गणना (Calculation of Profit / Loss on sale of Plant purchased on 01.10.2008

	₹	₹
Cost on 01.10.2008		5,00,000
Less Depreciation written off :		
For 2008-09 (6 Month)	25,000	
For 2009-10	47,500	
For 2010-11 (6 Month)	21,375	93,875
		4,06,125
Less : Sold		4,20,000
Profit on sale of Plant		13,875

उदाहरण (III ustraation) 9 1 अप्रेल 2010 को बलराम की पुस्तको में प्लान्ट व मशीनरी 5,00,000 ₹ (लागत मूल्य) पर दिखाई गई थी और उसके सम्बन्ध मे उस तिथि तक 2,00,000 ₹ ह्रास के रूप में अपलिखित किये जा चुके थे उक्त मद मे एक कार शामिल है जिसका लागत मूल्य 30,000 ₹ है तथा उस पर 8,000 ₹ ह्रास अपलिखित किया जा चुका है।

1 दिसम्बर 2010 को यह कार बुरी तरह से नष्ट हो गयी तथा उसके अवशेष को 4,000 ₹ में बेच दिया गया। इस कार का बीमा भी करवाया हुआ था और 10 फरवरी, 2011 को 25,000 ₹ प्राप्त हो गये।
31 मार्च, 2011 को प्लान्ट एवं मशीनरी पर 30,000 ₹ ह्रास के रूप में अपलिखित किये गये।
31 मार्च, 2011 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्लान्ट एवं मशीनरी खाता और ह्रास आयोजन खाता बनाइये।

(On 1st April, 2010 Plant and Machinery of Mr. Bal Ram stood at ₹ 5,00,000 at the cost and depreciation written off to that date in respect there of amounted to ₹ 2,00,000.
This items includes ₹ 30,000 being the cost of a car. The total depreciation provided theron being ₹ 8,000.

On 1st December, 2010 this car was badly damaged and was sold off a scrap for ₹ 4,000. It was, however, insured and sum of ₹ 25,000 was received from the insurance company on 10th Feb., 2011

On 31st March, 2010 ₹ 30,000 was provided for depreciation on plant and machinery.
Prepare Plant and Machinery Account and provision for Depreciation Account for the year ended 31st March, 2011)

Plant and Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2010			₹	2010			₹
April 1	To Balance b/d		5,00,000	Dec,1	By Bank(Sale Price) A/c		4,000
Feb. 10	To Profit and Loss A/c (Profit) (As per working Note)		7,000	2011 Feb. 10	By Bank (Insurance Co.)A/c		25,000
					By Provision for Depreciation A/c		8,000
				Mar.31	By Balance c/d		4,70,000
			5,07,000				5,07,000

Provision for Depreciation Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2011			₹	2010			₹
Feb. 10	To Machinery A/c		8,000	April,1	By Balance b/d		2,00,000
Mar.31	To Balance c/d		2,22,000	2011 Mar.31	By P&L A/c		30,000
			2,30,000				2,30,000

वैकल्पिक (Alternative Solution)

Plant and Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2010			₹	2010			₹
April 1	To Balance b/d		5,00,000	Dec,1	By Plant & Machinery Disposal A/c		30,000
				2011 Mar.31	By Balance c/d		4,70,000
			5,00,000				5,00,000

Provision for Depreciation Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2011			₹	2010			₹
Feb. 10	To Machinery A/c		8,000	April 1	By Balance b/d		2,00,000
Mar.31	To Balance c/d		2,22,000	2011 Mar.31	By P&L A/c		30,000
			2,30,000				2,30,000

Plant and Machinery Disposal Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F.	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2010			₹	2010			₹
Dec.1	To Plant & Machinery A/c		30,000	Dec,1	By Cash (Sale Price) A/c		4,000
2011 Feb.10	To Profit and Loss A/c (Profit)		7,000	2011 Feb.10	By Cash(Insurance Co.) A/c		25,000
				,,	By Provision for Depreci ation A/c		8,000
			37,000				37,000

कार्य की टिप्पणी (Working Note)

क्षतिग्रस्त कार के विक्रय पर हुए लाभ हानि की गणना (Calculation of Profit or Loss on sale of damaged car)

Cost of the Car sold	30,000
Less : Depreciation charged to date	8,000
	22,000
Selling Price and Insurance Claim (Rs. 4000 + Rs.25000)	29,000
Profit on Sale	7,000

उदाहरण (Illustration) 10 निम्नलिखित खाते की व्याख्या कीजिये –(Interpret the following Ledger Account):

Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F.	Amount
2010			₹	2010			₹
01.04	To Balance b/d		1,75,000	30.06	By Bank A/c	CB/22	70,000
30.09	To Batliboi & Co.	J44	70,000	30.6	By P&L A/c	J/11	30,000
				31.12	By Depreciation A/c @ 10% (₹ 5,625 + ₹ 1,750)	J/55	7,375
				31.12	By Balance c/d		1,37,625
			2,45,000				2,45,000

हल (Solution)

1. 1 अप्रेल 2010 को मशीन खाते में 1,75,000 ₹ का शेष था।
2. 30 जून 2010 को एक मशीन जिसकी लागत 1,00,000 ₹ (विक्रय मूल्य 70,000 + हानि 30,000 ₹) थी 70,000 ₹ में बेच दी गई जिसका लेखा रोकड़ बही के पेज 22 पर किया गया।
3. 30 जून 2010 को बेची गई मशीन 3 माह (1 अप्रेल 2010 से 30 जून 2010) का ह्रास अलग से लेंखाकिंत नही किया गया है। इस ह्रास की राशि को मशीन विक्रय पर होने वाली हानि के साथ जोड़ कर लाभ हानि खाते में ले जाया गया है जिसका लेखा जर्नल के पेज 11 पर किया गया।
4. 30 जून 2010 को बेची गई मशीन पर ह्रास 2,500 ₹ तथा मशीन के विक्रय पर हानि 27,500 ₹ को अलग दर्शाया जाना उचित रहता है।
5. 30 सितम्बर 2010 को 70,000 ₹ की मशीन बाटलीबॉय एण्ड कम्पनी से उधार खरीदी गई जिसका लेखा जर्नल के पेज 44 पर किया गया।
6. 31 दिसम्बर 2010 को पुरानी मशीन 75,000 ₹ (1,75,000 ₹ प्रारंम्भिक शेष में से 1,00,000 ₹ की पुस्तक मूल्य की ब्रिक्री घटाने पर) की विद्यमान है जिन पर 9 माह (01.04.2010 से 31.12.2010) का ह्रास 10 प्रतिशत वार्षिक दर से 5,625 ₹ तथा 30 सितम्बर 2010 को 70,000 रू. में खरीदी मशीन पर 10 प्रतिशत वार्षिक की दर से 3 माह का ह्रास 1,750 ₹ लगाया गया। मशीन पर कुल ह्रास 7,375 ₹ लगाया गया जिसका लेखा जर्नल के पेज 55 किया गया।
7. 31 दिसम्बर 2010 को संस्था में विद्यमान मशीनो का अपलिखित मूल्य 1,37,625 ₹ है।

उदाहरण (Illustration) 11 निम्नलिखित खाता मोहन लिमिटेड की बहियो से प्राप्त किया गया –
(The following Ledger Account has been extracted from the books of Mohan Limited :

Machinery Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	J.F	Amount	Date	Particulars	J.F	Amount
2010			₹	2010			₹
Jan.1	To Balance b/d		4,00,000	Jan. 1	By Bank A/c		80,000
	(Cost Rs. 8,00,000)			Dec.31	By Balance c/d		9,20,000
April 1	To Bank A/c		2,00,000				
July, 11	To Bank A/c		4,00,000				
			10,00,000				10,00,000

कम्पनी घटती हुई शेषों वाली पद्वति से 10 प्रतिशत मूल्यह्रास लगाती है। चालू वर्ष में हुई वृद्धि पर पूरे वर्ष का ह्रास लगाया जाता है। 01.01.2010 को बेची गई मशीन 29.08.2006 को 2,00,000 ₹ की लागत पर खरीदी गई थी।
आप (1) मशीन की बिक्री पर हुए लाभ या हानि की गणना कीजिये तथा बेची गई मशीन का समायोजन दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए। (2) 31 दिसम्बर 2010 को लगाये जाने वाले ह्रास की राशि की गणना कीजिये तथा ह्रास लगाने के सम्बन्ध में जर्नल प्रविष्टि कीजिये।
The Company Charged 10% depreciation on the reducing balance method. Depreciation for the full year is provided on the additions during the year. The machinery sold on 01.01.2010 was purchased on 29.08.2006 at a Cost of ₹ 2,00,000.

You are required (1) to Compute Profit or Loss on sale of machine and to show journal entry to record the adjustment necessary in respect of the machine sold and (2) to calculate the amount of depreciation chargable for the year ended 31st December, 2010 and to record the journal entry for depreciation charged.

हल (Solution)

1 जनवरी 2010 को बेची गई मशीन पर हुए लाभ हानि की गणना (Calculation of Profit or Loss on Sale of machinery on 01.01.2010) :

	₹
Cost of Machine on 29.08.2006	2,00,000
Less : Depreciation Written Off :	

	₹	
For 2006	20,000	
For 2007	18,000	
For 2008	16,200	
For 2009	14,580	68,780
Written down Value Machine of on 01.01.2010		1,31,220
Less : Selling Price of Machine		80,000
Loss on Sale of Machine		51,220

31 दिसम्बर 2010 को समाप्त हुए वर्ष के मूल्य ह्रास की गणना (Calculation of depreciation for the year ended 31.12.2010) :

		₹
Balance of Machinery Account on 01.01.2010		4,00,000
Less : Written down value of machine sold on 01.01.2010		1,31,220
Old Machines on which depreciation will be charged		2,68,780
Add; Addition during the year		
	₹	
On 01.04.2010	2,00,000	
On 11.07.2010	4,00,000	6,00,000
Total value of Machinery on which depreciation charged for 2010		8,68,780

Amount of Depreciation = Rs. 8,68,780 X 10% or Rs. 86,878

Journal

Date	Particular	L.F	Debit	Credit
2010			₹	₹
31.12	Profit & Loss a/c Dr To Machinery a/c (Being Loss on Sale of Machinery now adjusted)		51,220	51,220
31.12	Depreciation a/c Dr To Machinery A/c (Being depreciation charged.)		86,878	86,878

आयोजन या प्रावधान (Provision): कुछ खर्चे एवम् हानियां ऐसी प्रकृति की होती है कि उनका सम्बन्ध तो वर्तमान लेखा वर्ष से होता है परन्तु उनका भुगतान या पूर्ण समायोजन वर्तमान लेखा वर्ष में नही हो सकता क्योकि इनकी राशि निश्चित नहीं होती है। वर्तमान लेखा वर्ष का सही–सही लाभ–हानि ज्ञात करने के लिए इनका प्रावधान करना आवश्यक होता है। जो राशि किसी सम्पत्ति की कमी, ह्रास अथवा नवीनीकरण के लिए रखी जाती है उसे आयोजन कहते है। यदि दायित्व तो ज्ञात है लेकिन उसकी राशि की निश्चितता नही है तो भी आयोजन किया जाता है। लाभ हो अथवा नही, आयोजन का निर्माण करना ही होता है । इसे लाभ हानि खाते पर प्रभार (Charge) के रूप में दर्शाते है ।

प्रावधानो में निम्नलिखित प्रावधानो को भाामिल किया जाता है।

1. मूल्यह्रास के लिए प्रावधान (Provision for Depreciation)
2. डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए प्रावधान (Provision for Bad and Doubtful debts)
3. देनदारो पर बट्टे के लिए प्रावधान (Provision for discount on debtors)
4. आयकर के लिए प्रावधान (Provision for income tax)
5. मरम्मत एवं रखरखाव के लिए प्रावधान (Provision for Repairs and Maintenance)

प्रथम तीन प्रावधानो का विस्तार से वर्णन इस तथा अन्य अध्यायों मे किया जा चुका है। सामान्यतया सभी तरह के प्रावधानों का लेखांकन एक जैसा ही होता है फिर भी शेष दोनो प्रावधानो का लेखाकंन यहां समझाया जा रहा है।

प्रावधानो का लेखांकन (Accounting for provisions)

आयकर के लिए प्रावधान :– व्यापारी को लेखा वर्ष में अर्जित किये गये लाभ पर आयकर अधिनियम के प्रावधानो के अनुसार आयकर का प्रावधान करना आवश्यक होता है । अंतिम खाते बनाने के पश्चात् आय की विवरणी आयकर विभाग में जमा करवानी होती है जिसके आधार पर आयकर अधिकारी व्यापार पर कर का निर्धारण करता है । इस सम्बन्ध मं लेंखाकन इस प्रकार किया जाता है–

आयकर अग्रिम चुकाने पर	Advance Income Tax A/c To Cash / Bank A/c (Being advance income tax paid)	Dr
आयकर का प्रावधान करने पर	Profit and Loss A/c To Provision for Income Tax A/c (Being amount provided for income tax)	Dr

मरम्मत एवं रखरखाव प्रावधान : प्रत्येक वर्ष लाभ हानि खाते से मरम्मत एवं रखरखाव के लिए एक निश्चित राशि पृथक की जाती है तथा वास्तविक व्यय उपरोक्त प्रकार से पृथक की गई इस राशि से निर्मित संचय में से करते है। इस सम्बसन्ध में लेखांकन इस प्रकार किया जाता है –

मरम्मत एवं रखरखाव के लिए प्रावधान करने पर	Profit and Loss A/c To Provision for Repaiars and Maintenance A/c (Being amount Provided for Repaiars and Maintenance))	Dr
वास्तविक मरम्मत एवं रखरखाव व्यय चुकाने पर	Repairs and Maintenance A/c To Cash / Bank A/c (Being paid for Repair and Maintenance)	Dr
मरम्मत एवं रखरखाव व्यय को हस्तांतरित करने पर	Provision for Repair and Miantenance A/c To Repair & Maintenance A/c (Being amount transferred.)	Dr

उदाहरण (Illustration) 12 :

प्रतिवर्ष 2,000 ₹ की नियत राशि निर्धारित कर मरम्मत एवं रखरखाव के लिए प्रावधान बनाने का निर्णय किया। प्रथम चार वर्षो में वास्तविक मरम्मत एवं रखरखाव की राशियॉ इस प्रकार है 750 ₹, 900 ₹, 2,100 ₹, एवं 1,400 ₹ मरम्मत एवं रखरखाव संचय खाता खोलिए।

(An Yearly sum of ₹ 2,000 is set aside to cover provision for repairs and maintenance. The expenses for repairs and maintenance in the first four year are ₹ 750, ₹ 900, ₹, 2,100 and ₹ 1,400. Show provision for Repairs and maintenance Account.

Provision for Repairs and Maintenance Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
			₹				₹
Year I	To Repair A/c		750	Year I	By Profit & Loss A/c		2,000
	To Balance c/d		1,250				
			2,000				2,000
Year II	To Repair A/c		900	Year II	By Balance b/d		1,250
	To Balance c/d		2,350		By Profit & Loss A/c		2,000
			3,250				3,250

Year III	To Repair A/c To Balance c/d	2,100 2,250	Year III	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		2,350 2,000
		4,350				4,350
Year IV	To Repair A/c To Balance c/d	1,400 2,850	Year IV	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		2,250 2,000
		4,250				4,250

नोट :– यदि भविष्य में मरम्मत आदि पर व्यय करने की आवश्यकता न हो तो उक्त खाते का शेष 2,850 रू. पुनः लाभ हानि खाते में या सामान्य संचय खाते में हस्तान्तरित किया जा सकता है।

उदाहरण (Illustration) 13

ह्रास के लिये तथा मरम्मत एवं नवकरण के लिये संयुक्त प्रावधान मशीनों की मूल लागत पर प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत की दर से किया जाता है । मशीने 50,000 ₹ में खरीदी गई थी। इस उद्‌देश्य के लिये ''मूल्य ह्रास तथा मरम्मत के लिये प्रावधान खाता'' खोला गया जो निम्नलिखित वास्तविक मरम्मत एवं नवकरण से नाम किया गया।
(I years ₹ 1,500 II Year ₹ 1,600 ; III Year ₹ 2,100 ; IV Year ₹ 3,000 and V Year ₹ 4,200.)
पॉचवे वर्ष के अन्त में इसके कुछ छोटे पुर्जे जिनका मूल्यांकन 4,000 ₹ था, इसके स्थान पर 75,000 ₹ में खरीदी गयी नई मशीन को स्थापित करने में प्रयुक्त हुए, शेष मशीन 20,000 ₹ में बेच दी गयी। पुरानी मशीन को बेचने के परिणामस्वरूप हुई हानि को आगम हानि माना गया। '' मूल्य ह्रास तथा मरम्मत के लिये प्रावधान खाता'' पॉच वर्षो के लिये तथा वर्ष के अन्त का पुरानी तथा नई मशीन का खाता बनाइये।

A combined provision for depreciation and repairs and renewals were made every year at 10% of the original cost of a machine purchased at RS. 50,000. The "Provision for depreciation and maintenance account" that was opened for the purpose was therefore, debit with the actual cost of repairs and renewals which were as stated below :

I years Rs. 1,500 II Year ₹ 1,600 ; III Year ₹ 2,100 ; IV Year ₹ 3,000 and V Year ₹ 4,200.

At the end of the V Year, the machine was sold out at ₹ 20,000 after utilizing a few of its minor parts valued at ₹ 4,000 in installing in its place a new machine purchased at ₹ 75,000. The resulting loss in the disposal of the old machine was debited to revenue. Write up " Provision for Depreciation and Maintenance Account" for the five years and the old and the new machine account at the end.

हल (Solutions):

New Machine Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
Year V	To Old Machinery A/c To Bank A/c		₹ 4,000 75,000	Year V	By Balance c/d		₹ 79,000
			79,000				79,000

Provision for Depreciation and Maintenance Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
Year I	To Repair & Renewals A/c To Balance c/d		₹ 1,500 3,500	Year I	By Profit & Loss A/c (Rs. 50,000 x 10%)		₹ 5,000

			5,000				5,000
Year II	To Repair & Renewals A/c To Balance c/d		1,600 6,900	Year II	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		3,500 5,000
			8,500				8,500
Year III	To Repair & Renewals A/c To Balance c/d		2,100 9,800	Year III	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		6,900 5,000
			11,900				11,900
Year IV	To Repair & Renewals A/c To Balance c/d		3,000 11,800	Year IV	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		9,800 5,000
			14,800				14,800
Year V	To Repair & Renewals A/c To Balance c/d		4,200 12,600	Year IV	By Balance b/d By Profit & Loss A/c		11,800 5,000
			16,800				16,800

Old Machine Account

Dr. Cr.

Date	Particulars	JF	Amount	Date	Particulars	JF	Amount
Year V	To Balance b/d		₹ 50,000	Year V	By New Machinery A/c By Bank A./c By Provision for Depn. & Maintenance A/c By Profit & Loss A/c		₹ 4,000 20,000 12,600 13,400
			50,000				50,000

संचय का अर्थ (Meaning of Reserve): संचय का तात्पर्य उन राशियो से है जिन्हे किन्ही वर्षों के लाभो मे से निकालकर भविष्य की हानियों एवं दायित्वों को पूरा करने के लिए संचित किया जाता है । संचय व्यापार की कार्यशील पूँजी को बढ़ाने के लिए तथा उसकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए रखा जाता है। संचय बनाने का कार्य लाभ–हानि नियोजन (Appropriation) खाते के माध्यम से होता है । संचय के प्रमुख उदाहरण लाभांश समानीकरण संचय (Dividend Equalisation Reserve), सामान्य संचय (General Reserve), आकस्मिक संचय (Contingency Reserve) तथा पूंजीगत संचय (Capital Reserve) आदि है।

संचय के भेद (Types of Reserves)

(i) **सामान्य संचय (General Reserve):** इसका निर्माण किसी विशेष हानि की पूर्ति के लिए न होकर व्यवसाय की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने तथा व्यवसाय के विस्तार के लिए धन की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए किया जाता है। इसका निर्माण लाभ हानि नियोजन खाते के माध्यम से किया जाता है। यदि व्यवसाय में लाभ होता है तो इस संचय का निर्माण किया जा सकता है अन्यथा नही। इसके निर्माण के लिए निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टि की जाती है–

Profit and Loss Appopriation A/c Dr.

To Genral Reserve A/c

(Being amount transfer to General Reserve account)

(ii) **पूंजीगत संचय (Capital Reserve):** पूंजीगत संचय वह राशि है जो कानूनी तौर से अंशधारियो में लाभांश के रूप में नही बांटी जा सकती । इसे पूजी लाभो (Capital Profit) में से बनाया जाता है तथा सामान्यतः लाभांश के वितरण के लिए उपलब्ध नही होता है।

पूंजीगत संचय का निर्माण – पूंजीगत संचय का निर्माण निम्नलिखित लाभो के हस्तान्तरण द्वारा किया जाता है –

(1) समामेलन के पूर्व का लाभ (Profit prior to incorporation)
(2) अंशो के हरण (forfeiture) पर लाभ
(3) पूजी शोधन संचय खाते का शेष (Balance of Capital Redemption Reserve Account)
(4) अंशो अथवा ऋणपत्रो के निर्गमन पर प्राप्त प्रब्याजि (Premium)
(5) पूंजी कटौती खाता (Capital Reduction A/c)
(6) पूंजीगत प्राप्ति (Capital Receipts)
(7) किसी चालू व्यवसाय के खरीदने पर यदि शुद्व सम्पत्तियो (Net Assets) का मूल्य व्यवसाय के क्रय–मूल्य (Purchase Consideration) से अधिक है तो आधिक्य की रकम।
(8) अंश आवेदनकर्त्ता को अंश आवंटित न होने पर भी उसके द्वारा वापस न मांगी गई तथा कम्पनी के पास ही छोड़ी गई अंश आवेदन राशि।
(9) ऋणपत्रो के शोधन पर लाभ (बट्टे के रूप में)

पूंजीगत संचय का प्रयोग – पूंजी संचय का प्रयोग साधारणतः बोनस अंशो के निर्गमन एवं पूंजीगत हानियो को अपलिखित करने अथवा कम्पनी की वित्तीय स्थिति को सुदृढ करने हेतु किया जाता है। पूजी सचंय का प्रयोग ख्याति, प्रारम्भिक व्यय, ऋणपत्रो के निर्गमन पर व्यय तथा अन्य इसी तरह के व्ययों को अपलिखित करने के लिए किया जा सकता है। उपरोक्त मद (3) का प्रयोग केवल पूर्णदत्त बोनस अंश (Full paid Bonus shares) निर्गमित करने के लिए ही किया जा सकता है । मद (4) का प्रयोग कम्पनी अधिनियम की धारा 78 में प्राविधित कार्यो के लिए ही किया जा सकता है।

सामान्य संचय एवं पूजीगत संचय में अन्तर
(Distinction between General Reserve and Capital Reserve)

क्र.स.	अन्तर का आधार	सामान्य संचय अथवा आयगत संचय	पूंजीगत संचय
1	परिभाषा	सामान्य संचय वह संचय है जो कि पूंजीगत संचय नहीं है तथा जिसे लाभांश वितरण के रूप में काम ले सकते है।	पूंजीगत संचय वह संचय हैं जिनका वितरण लाभांश के रूप में नहीं किया जाता है।
2	निर्माण	आयगत संचय का निर्माण व्यापार के सामान्य लाभों में से किया जाता है।	पूंजीगत संचय का निर्माण व्यापार के सामान्य लाभ के अलावा कमाये गये पूंजीगत लाभों में से भी किया जाता है।
3	उद्धेश्य	आयगत संचय के निर्माण का प्रमुख उद्देश्य व्यापार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ बनाना है।	पूंजीगत संचय के निर्माण का उद्देश्य पूंजीगत हानियों को अपलिखित करना है।
4	अंशो के शोधन के लिए प्रयोग	शोध्य अधिमान अंशो के शोधन के समय ''पूंजी शोधन संचय खाते'' के निर्माण के लिए आयगत संचय को काम में लेते है।	पूंजीगत संचय का प्रयोग इस कार्य के लिए नही हो सकता है।

(iii) **गुप्त संचय (Secret Reserve)**

गुप्त संचय का आशय उस संचय से है जो वास्तव में अस्तिव में तो होता है परन्तुं उसे देखा नहीं जा सकता, केवल महसूस किया जा सकता हैं और जिसे स्थिति विवरण में नहीं दर्शाया जाता है। इसे अप्रकटित संचय (Hidden or

Undisclosed Reserve) भी कहते हैं । जिस व्यापारिक संस्था में गुप्त संचय होता हैं उसकी आर्थिक स्थिति उसके द्वारा प्रदर्शित आर्थिक स्थिति से कही अधिक अच्छी होती है। सम्पत्तियों एवं दायित्वों मे छिपे रहने के कारण गुप्त संचय को आन्तरिक संचय (Inner Reserve) भी कहते है। जैसे किसी व्यापारी को अपनी सम्पत्ति पर, जिसका मूल्य 50,000 ₹ है।, 20 प्रतिशत की दर से ह्रास लगाना चाहिए था लेकिन वह 30 प्रतिशत की दर से ह्रास का आयोजन करता है।, ऐसी स्थिति में , 5,000 ₹ का ह्रास अधिक लग जायेगा। इसका परिणाम यह होगा कि व्यापारी अपने शुद्व लाभ को 5,000 ₹ से कम दिखायेगा तथा सम्पत्ति को भी 5,000 ₹ से (अधिक ह्रास लगाने के कारण) कम मूल्य पर प्रदर्शित करेगा। इस प्रकार सृजित हुए यही 5,000 ₹ गुप्त संचय होता है।

गुप्त संचय बनाने के उद्देश्य – गुप्त संचय का सृजन निम्नलिखित उद्देश्यों से किया जाता है। :–

(1) व्यापार की वित्तीय स्थिति को अधिक सुदृढ करने के लिए।
(2) व्यापार की विशेष हानियो को इस प्रकार के संचय से अपलिखित करने के लिए ।
(3) प्रतिद्वन्द्वियो को वास्तविक लाभ ज्ञात न होने देने के लिए।
(4) कार्यशील पूंजी में वृद्वि करने के लिए।
(5) कर विभाग को चालू वर्ष में कम कर देने का उद्देश्य भी हो सकता है।

गुप्त संचय का निर्माण (Creation of Secret Reserve)

अनेक प्रकार की लेखा क्रियाओ के फलस्वरूप गुप्त संचय का निर्माण संभव हो सकता है । अपने व्यवसाय के लाभों तथा सम्पत्तियों को कम मूल्य पर दिखलाना तथा दायित्वों एवं हानियों को अधिक मूल्य पर दिखलाना ही गुप्त संचय के निर्माण की कुंजी है । लाभो को वास्तविक लाभों से कम दिखलाने के लिए पूंजीगत व्यय को आयगत व्यय मानना, पूर्वदत्त व्ययों को चिट्ठे में न दिखाना, उपार्जित आय को चिट्ठे में न दिखाना, इस वर्ष की बिक्री न दिखलाना तथा अगले वर्ष के क्रय को इसी वर्ष का क्रय मानना गुप्त संचय बनाने की विधियॉ है। सम्पत्तियों का अवमूल्यन करने के लिए सम्पत्तियों पर अधिक ह्रास काटना, सम्पत्ति में होने वाली स्थाई वृद्वि न मानना, किसी सम्पत्ति को पुस्तकों में न दिखलाना तथा ख्याति को अपलिखित कर देना भी गुप्त संचय निर्माण की विधियॉ है। दायित्वों की वृद्वि करने हेतु संदिग्ध दायित्वों को पूर्ण दायित्व मान लेना, अदत्त व्ययों के लिए आवश्यकता से अधिक आयोजन करना तथा साधारण संचय को लेनदारों में सम्मिलित करना इत्यादि के द्वारा भी गुप्त संचय का निर्माण किया जाता है। संक्षेप में किन्ही मदों के माध्यम से व्यापारिक एवं लाभ हानि खाते के नाम पक्ष मे वृद्वि करना तथा जमा पक्ष की रकम को कम करना ही गुप्त संचय का निर्माण है। इसी तरह सम्पत्ति पक्ष की मदों को कम दिखलाने तथा दायित्व पक्ष की मदों को अधिक दिखलाने से गुप्त संचय का निर्माण हो जाता है ।

गुप्त संचय से लाभ (Advantages of Secret Reserve)

गुप्त संचय के निर्माण के कारण व्यापारी अपने लाभ की दर प्रत्येक वर्ष में एक समान रख सकता है तथा किसी वर्ष में हुई आकस्मिक हानि को इस संचय से पूरा कर सकता है। अपने व्यवसाय के लाभों को कम बतलाने पर प्रतिद्वन्द्वियों से प्रतियोगिता कम रहती है। कुछ व्यापारिक संस्थाए जैसे बैंकों, बीमा कम्पनियों आदि की साख जनता के विश्वास पर निर्भर होती है। इसलिए ये कम्पनियॉ गुप्त संचय के माध्यम से अपनी साख बनाये रखती है।

गुप्त संचय से हानियॉ (Disadvantages of Secret Reserve)

गुप्त संचय के निर्माण का सबसे प्रमुख दोष यह है कि संस्था का लाभ–हानि खाता सच्चा एवं सही (True and Fair)लाभ प्रदर्शित नहीं करता है तथा स्थिति विवरण भी वास्तविक आर्थिक स्थिति को प्रदर्शित नहीं करता है। प्रबन्धक भी अपनी कमियों को गुप्त संचय के माध्यम से छिपा लेते है।

उदाहरण (IIIustration) : 14

बताइये निम्नलिखित में से गुप्त संचय के निर्माण के कौन–कौन से कारण है।–
(Point out which of the following results in creating a Secret Reserve)

(क) किसी सम्पत्ति की बिक्री (Sale of an Assets)
(ख) शेष माल का मूल्य कम लगाना (Under valuation of Stock)
(ग) प्रतिभूतियों पर प्राप्त प्रीमियम (Securities Premium)
(घ) संदिग्ध ऋणों के लिए अधिक प्रावधान करना (Excessive Provision for doubtful debts)
(ड़) जब्त किए हुए अंशों को पुनः जारी करने पर होने वाला लाभ
(Profit earned by reissuing the forfeited shares)

हल (Solution):

उपरोक्त 5 कारणो में से केवल (ख) तथा (घ) ही गुप्त संचय का निर्माण करने में सहायक हो सकते है।

उदाहरण (Illustration) : 15

निम्नलिखित तथ्यों के आधार पर एक व्यापार के गुप्त संचय के संगठक ज्ञात कीजिये:
(From the following figures, find out the composition of Secret Reserves of a Business)

Liabilities	Amount ₹	Amount ₹	Assets	Amount ₹	Amount ₹
Bill Payable	4,000	4,000	Building	17,000	13,000
Creditors	10,000	14,000	Furniture	7,000	5,000
Capital	20,000	20,000	Debtors	25,000	20,000
Profit & Loss A/c	15,000	-			
		38,000			38,000

सम्पत्यिों एवं दायित्वों के वास्तविक मूल्य राशि के प्रथम खाने में दिये गये है। व्यापार के मेनेजर ने आकस्मिक हानि के 10,000 रू. को गुप्त संचय से अपलिखित करने का निश्चय किया। एक विवरण पत्र बनाकर समझाइये कि गुप्त संचय का निर्माण किस प्रकार किया गया तथा व्यापारी की पुस्तको में इसका प्रयोग किस तरीके से किया गया। व्यापारी का परिवर्तित चिट्ठा भी बनाइये।

(Real values of assets and liabilities are shown in the first column of amount. The Manager of the business decided to utilize Rs. 10,000 from the secret reserve to write off accidental loss of the company. Prepare a statement showing how the secret reserve has been created and utilized in the books of the company. Also prepare the revised Balance Sheet).

हल (Solution)

Statement showing the composition of Secret Reserve –

		₹
Building	₹ (17,000-13,000)	4,000
Furniture	₹ (7,000-5,000)	2,000
Debtors	₹ (25,000-20,000)	5,000
Creditors	₹ (14,000-10,000)	4,000
Total		15,000

इस 15,000 ₹ के गुप्त संचय में से 10,000 ₹ आकस्मिक हानि को अपलिखित करने हेतु प्रयोग किये जायेंगे तथा शेष 5,000 ₹ से देनदारो के लिए डूबत ऋण का प्रावधान करेंगें।

		₹	₹
Building A/c	Dr.	4,000	
Furniture A/c	Dr.	2,000	
Debtors A/c	Dr.	5,000	
Creditors A/c	Dr.	4,000	
To Accidental Loss A/c			10,000
To Provision for Bad Debts A/c			5,000
(Being Accident loss written off)			

Balance Sheet as on

Liabilities	Amount ₹	Assets		Amount ₹
Bill Payable	4,000	Building		17,000
Creditors	10,000	Furniture		7,000
Capital	20,000	Debtors	25,000	
Profit & Loss A/c	10,000	Less : Provision for		
		Bad Debts	5,000	20,000
	44,000			44,000

उदाहरण (Illustration) 16 कारण सहित बताइये कि निम्नलिखित वाक्य 'सत्य है या असत्य'।– (State with reasons whether the following sentences are "True" or "False"

(1) ह्रास लगाने की अपलिखित मूल्य पद्वति तथा घटते हुए शेषों वाली पद्वति में अन्तर विद्यमान रहता है।

(There exists difference between the written down value method and Diminishing balance method of depreciation)

(2) फर्नीचर तथा फिटिंग पर 10 प्रतिशत ह्रास लगाना है तथा 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास लगााना है, इस अभिव्यक्ति का अर्थ समान है।

(The expression – depreciation is to be charged at 10% and 10% P.a. on furniture and Fitting carry the same meaning)

(3) वित्तिय वर्ष मे यदि हानि हो तो ह्रास नहीं लगाया जा सकता।

(Depreciation can notbe provided in case of loss in a financial Year.)

(4) देनदारों पर बट्टे के लिए प्रावधान की गणना करते समय देनदारों में से संदिग्ध देनदारों के लिए प्रावधान घटाया जायेगा।

(The provision for discount on debtors is calculated after deducting the provision for doubtful debts from debtors.)

(5) अधिक मूल्यह्रास व्यापार, के रोकड़ लाभ को प्रभावित नही करेगा।

(Higher depreciation will not affect cash profit of the business.)

(6) डूबत ऋण प्रावधान को देनदारों के खातों में नाम लिखा जाता है।

(Provision for bad debts is debited to sundry debtors account.)

(7) समामेलन से पूर्व का लाभ पूंजी संचय का उदाहरण है।

(Profit prior to incorporation is an example of capital reserve.)

हल (Solution) :

(1) **असत्य** । घटती हुई शेषों वाली पद्वति में ह्रास अपलिखित मूल्य पर ही लगाया जाता है। अतः अपलिखित मूल्य कहा जाय या घटते हुए शेष, दोनों का तात्पर्य एक ही है और इनमें ह्रास की राशि एक समान ही ज्ञात होती है।

(2) **असत्य** । 10 प्रतिशत वार्षिक शब्द लिखा होने का अर्थ है कि फर्निचर एवम् फिटिंग खरीदते एवं बेचते समय लेखा अवधि के अनुरूप उसकी उपयोगिता के अनुपात में मूल्यह्रास लगाया जायेगा जबकि केवल 10 प्रतिशत शब्द लिखा है तो सम्पत्ति खरीदते समय पूरे वर्ष का तथा बेचते समय बिलकुल भी ह्रास नहीं लगाया जायेगा। इस स्थिति में खरीद व बिक्री की तिथि को ध्यान में नहीं रखा जाता है।

(3) **असत्य** । ह्यस लाभों पर प्रभार है, लाभों का नियोजन नहीं । अतः वित्तीय वर्ष में हानि होने पर भी मूल्यह्रास लगाया जायेगा ।

(4) **सत्य** । अच्छे देनदार ज्ञात करने के लिए कुल देनदारों में से संदिग्ध देनदारों का प्रावधान घटाना होता है क्योकि केवल अच्छे देनदार ही समय पर भुगतान करके बट्टा प्राप्त करते है।

(5) **सत्य**। मूल्यह्रास रोकड़ी व्यय न होने के कारण इससे नकद लाभ प्रभावित नहीं होता है।

(6) **असत्य** । डूबत ऋण प्रावधान को लाभ हानि खाते में नाम लिखा जाता है। चिट्ठे में प्रदर्शित करते समय डूबत ऋण प्रावधान खाते के शेष को देनदारों में से घटाकर दिखाते है।

(7) **सत्य** । कम्पनी का समामेलन हो जाने के बाद ही विधान के अनुसार वह अस्तित्व में आती है। अतः अस्तित्व विहीन स्थिति मे संस्था द्वारा कमाया गया लाभ पूंजीगत लाभ होगा।

प्रावधान और संचय में अन्तर (Distinction between Reserve and Provision)

क्र.स.	अन्तर का आधार	प्रावधान	संचय
1	परिभाषा	जो राशि ह्रास अथवा किसी ज्ञात दायित्व (जिसकी राशि अज्ञात है) के लिए लाभ में से अलग की जाती है, उसे "प्रावधान कहते है।	जो राशि व्यापार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने तथा कार्यशील पूंजी को बढांने के लिए संचित की जाती है उसे "संचय" कहते है।
2	लेखा	प्रावधान लाभ हानि खातें के माध्यम से बनाते है।	संचय का निर्माण लाभ–हानि नियोजन खाते के माध्यम से करते हे।
3	विनियोग	इसे साधारणतया व्यापार के बाहर विनियोजित नहीं किया जाता है, परन्तु कभी कभी ऐसा किया भी जाता है।	नियोजित रकम का विनियोग नहीं करने के कारण ही इसे संचय कहते है।
4	अनिवार्यता	प्रावधान अनिवार्य रूप से किया जाता है चाहे लाभ हो अथवा नहीं।	संचय में राशि को हस्तान्तरित किया जाना लाभों के होने पर निर्भर है तथा लाभों का नियोजन है।
5.	लाभांश के रूप में बंटवारा	आयोजन विशेष उद्‌देश्य के लिए किए जाने के कारण इसे लाभांश के रूप में नहीं बांटा जा सकता है।	संचय लाभों का ही दूसरा रूप है तथा लाभांश के रूप में बांटा जा सकता है।

स्वयं जांचिये–1

बताइये कि निम्नलिखित वाक्य सत्य' है या 'असत्य'–

(1) मूल्यह्रास सम्पत्ति की लागत का उसके उपयोग के अनुसार विभिन्न अवधियों मे न्याय संगत बंटवारा है।

(2) मूल्यह्रास की गणना सम्पत्ति के बीजक मूल्य, भाड़ा तथा स्थापित करने के व्ययो में से रोकड़ बट्‌टा घटाकर की जाती है।

(3) गुप्त संचय को चिट्‌ठे में प्रकट नहीं किया जाता है।

(4) सम्पत्ति की लागत में से अवशिष्ट मूल्य घटाने के बाद के शेष को सम्पत्ति के जीवनकाल में ह्रास के रूप में अपलिखित किया जाता है।

स्वयं जांचिये–2

बताइये कि निम्नलिखित वाक्य मे 'सत्य' है या 'असत्य'–

(1) घटते हुए शेषो वाली विधि में मूल्यह्रास तथा अनुरक्षण समान रूप से वसूल जाते है।

(2) यदि हम घटते हुए शेषो वाली विधि प्रयोग करे तो प्रत्येक वर्ष लगने वाला ह्रास समान राशि से घटेगा।

(3) मूलसह्रास स्थिर पूंजीगत सम्पत्तियो पर लगता हैं, इसलिए यह पूंजीगत व्यय है।

(4) यदि अपलिखित मूल्य पद्वति का प्रयोग किया जाय तो प्रत्येक वर्ष ह्रास की राशि एक ही रहेगी।

(5) मूल्यह्रास एक परिशोधित खर्चा है।

(6) भूमि भी ह्रास मान सम्पत्ति है।

(7) संचित ह्रास सम्पत्ति की पुर्नस्थापना के लिए एकत्रित रोकड़ का योग है।

(8) मूल्यह्रास अन्य सामान्य खर्चो की तरह रोकड़ व्यय है।

स्वयं जांचिये–3

(i) सम्पत्ति का नियमित उपयोग करने से उसके ....में होने वाली..... को मूल्य ह्यस कहते है ।

(ii) यदि पुरानी सम्पत्ति खरीदी जाय तो उसकी प्रथम बार मरम्मत करवाने का व्यय उसकी ..... जाता है ।

(iii) सम्पत्ति का उपयोगी जीवनकाल समाप्त होने पर उससे प्राप्त होने वाले मूल्य को ...... कहते है ।

(iv) नई............. के विकास से पुरानी सम्पत्ति चलन के बाहर हो जाती है इसे..... कहते है ।

(v) स्थायी सम्पत्ति के विक्रय पर विक्रय मूल्य तथा लागत मूल्य का अन्तर........... होता है ।

(vi) .... विधि से ह्यस लगाने पर सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य शून्य हो जाता है ।

(vii) स्थायी किस्त पद्धति की तुलना में क्रमागत ह्रास विधि में ह्रास की दर....... होती है ।
(viii) .... संचय के निर्माण का उद्धेश्य व्यापार की आर्थिक स्थिति को सुद्धढ करना है ।
(ix) पूंजी संचय के निर्माण के लिए...........को प्रयोग में लाते है ।
(x) प्रतिद्धंधियों को धोखा देने के लिए....... संचय का निर्माण किया जाता है ।

स्वयं जांचिये–4

(i) किसी ज्ञात दायित्व के लिए लाभों में से अलग की गई राशि........... कहलाती है ।
(ii) सम्पत्तियों को वास्तविक मूल्य से ....मूल्य पर दिखाकर........ संचय बनाया जाता है ।
(iii) गुप्त संचय का निर्माण करने के लिए दायित्वों को उनके वास्तविक मूल्य से.... मूल्य पर दिखाया जाता है।
(iv) लाभ हानि खाते के माध्यम से .... का निर्माण किया जाता है ।
(v) संचय का निर्माण .... खाते के माध्यम से होता है ।
(vi) व्यापार में लाभ हो या हानि ..... तो अनिवार्य रूप से किया जाता है ।

सारांश

व्यापार में निरन्तर उपयोग करने, समय व्यतीत होने, विद्यमान मात्रा में कमी होने या प्राकृतिक प्रकोप के कारण सम्पत्ति के मूल्य आने वाली कमी को मूल्य ह्रास कहते है । व्यापारी को अपने व्यापार के संचालन से हुए लाभ हानि की जानकारी प्राप्त करने तथा सही सही आर्थिक स्थिति की जानकारी प्राप्त करने के लिए ह्रास का लेखांकन करना आवश्यक है ।

ह्रास का लेखांकन करने की दो विधियां प्रचलित है परन्तु स्थाई किस्त पद्धति की तुलना में क्रमागत ह्रास पद्धति अधिक उपयोगी एवं लोकप्रिय है । स्थायी किस्त पद्धति में सम्पत्ति का अपलिखित मूल्य शून्य हो सकता है परन्तु क्रमागत ह्रास पद्धति में सम्पत्ति का अपलिखित मूल्य कभी भी शून्य नहीं हो सकता है । स्थायी किस्त पद्धति की तुलना में क्रमागत ह्रास पद्धति में मूल्य ह्रास अधिक दर से लगाया जाता है ।

कुछ व्यय एवं हानियां ऐसी होती है जिनका सम्बंध तो चालू लेखा वर्ष से होता है परन्तु उनकी राशि निश्चित नहीं होने के कारण अनुमान के आधार पर उनका लेखांकन किया जाता है ताकि व्यापार का सही लाभ हानि एवं आर्थिक स्थिति ज्ञात की जा सके तो ऐसी अनुमानित आधार पर लेखांकित की गई राशि को प्रावधान कहते है ।

लाभ हानि नियोजन खाते के माध्यम से भविष्य में होने वाली हानियों की पूर्ति करने, कार्यशील पूंजी बढाने तथा व्यापार की आर्थिक स्थिति को सुद्धढ करने के लिए लाभों का नियोजन करना संचय कहलाता है । पूंजीगत लाभों का प्रयोग करके बनाया जाने वाला संचय पूंजीगत संचय कहलाता है । सम्पत्तियों को वास्तविक मूल्य से कम मूल्य पर तथा दायित्वों को वास्तविक मूल्य से अधिक मूल्य पर दिखाकर जिस संचय का निर्माण किया जाता है उसे गुप्त संचय कहते है । बैंकिग, बिजली तथा बीमा कम्पनियों के अतिरिक्त अन्य संस्थाओं के लिए इसका निर्माण करना अवैधानिक है ।

कठिन शब्द

मूल्यह्रास या अवयक्षण (Depreciation)	क्षयीकरण (Depletion),
अप्रचलन (Obsolescence)	अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value)
प्रावधान (Provision)	संचय (Reserve)
पूंजीगत संचय (Capital Reserve)	गुप्त संचय (Secret Reserve)
पुनर्स्थापना (Replacement)	उच्चावचन (Fluctuation)

अभ्यास प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न (Multiple Choice type questions)

(1) स्थायी सम्पत्तियों पर किये गये व्यय को उतनी ही अवधि में बाट दिया जाता है जितनी अवधि तक ऐसे व्यय का लाभ व्यापार को मिलता है इसका कारण है।–

(अ) आय तथा व्ययो के मिलान की अवधारणा (ब) निरन्तरता की अवधारणा
(स) रूढिवादिता की परम्परा (द) मूल्यह्रास का लेखा करना ( )

(2) स्थायी सम्पत्ति के मूल्य में कमी आने का कारण है।–

(अ) सम्पत्ति का निरन्तर प्रयोग (ब) सम्पत्ति की पूर्व निर्धारित अवधि समाप्त होना
(स) अप्रचलन (द) उपरोक्त सभी ( )

(3) स्थायी सम्पत्ति पर लगाये जाने वाले ह्रास की रकम से जिस खाते को नाम किया जायेगा वह है–

(अ) स्थायी सम्पत्ति खाता (ब) मूल्यह्रास खाता
(स) ह्रास प्रावधान खाता (द) लाभ–हानि खाता ( )

(4) स्थायी किस्त पद्वति के अन्तर्गत वार्षिकह्रास की राशि निकालने का सूत्र है।–

(अ) (लागत +स्थापना व्यय–अवशिष्ट मूल्य) / अनुमानित जीवन काल वर्षो में
(ब) (लागत –स्थापना व्यय +अवशिष्ट मूल्य) / अनुमानित जीवन काल वर्षो में
(स) (लागत –स्थापना व्यय–अवशिष्ट मूल्य) / अनुमानित जीवन काल
(द) (लागत +स्थापना व्यय+हटाने का व्यय –अवशिष्ट मूल्य) / अनुमानित जीवन काल वर्षो में ( )

(5) शुरू के वर्षो में अधिक तथा उत्तरोतर ह्रास की राशि में कमी आती है।–

(अ) स्थायी किस्त पद्वति में (ब) क्रमागत ह्रास पद्वति में ( )
(स) स्थायी किस्त एवम् क्रमागत ह्रास दोनों विधियों मे (द) उपरोक्त मे से कोई नहीं

(6) मूल्यह्रास की दर समान रहने पर भी स्थायी किस्त पद्वति में क्रमागत ह्रास पद्वति की तुलना मे–

(अ) मूल्यह्रास कम लगाया जाता है (ब) मूल्यह्रास अधिक लगाया जाता है। ( )
(स) मूल्यह्रास की राशि समान रहती है। (द) मूल्यह्रास नहीं लगाया जाता है।

(7) क्रमागत ह्रास विधि के अन्तर्गत ह्रास की गणना की जाती है। –

(अ) सम्पत्ति के लागत मूल्य पर (ब) सम्पत्ति के अपलिखित मूल्य पर
(स) सम्पत्ति के बाजार मूल्य पर (द) सम्पत्ति खाते के प्रारम्भिक शेष पर ( )

(8) स्थायी किस्त पद्वति से ज्ञात किया गया ह्रास प्रति वर्ष–

(अ) बढता है। (ब) घटता है। (स) समान रहता है। (द) घटता–बढता रहता है। ( )

(9) वर्ष के अन्त में ह्रास का प्रावधान करने पर जर्नल प्रविष्टि होगी–

(अ) Profit & Loss A/c Dr.
To Depreciation A/c
(ब) Depreciation A/c Dr.
To Profit & Loss A/c
(स) Profit & Loss A/c Dr.
To Provision forDepreciation A/c
(द) Depreciation A/c Dr.
To Provision for Depreciation A/c

(10) सम्पत्ति निस्तारण खाता खोला जाता है। –

(अ) बेची जाने वाली सम्पत्ति का लाभ हानि ज्ञात करने के लिए (ब) बेची जाने वाली सम्पत्ति की लगात को हस्तान्तरित करने के लिए ( )
(स) बेची जाने वाली सम्पत्ति का ह्रास प्रावधान खाते हस्तान्तरित करने के लिए (द) सम्पत्ति का निस्तारण करने के लिए

(11) किसी ज्ञात दायित्व के लिए बनाया जाता है –

(अ) सामान्य संचय (ब) पूंजी संचय

(स) प्रावधान (द) गुप्त संचय ( )

(12) अज्ञात दायित्व के लिए बनाया जाता है–

(अ) सामान्य संचय (ब) पूंजी संचय

(स) प्रावधान (द) गुप्त संचय ( )

(13) देनदारों पर बट्टा आयोजन अंतिम खाते बनाते समय दर्शाया जाता है

(अ) लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में (ब) लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में

(स) लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में तथा चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में देनदारों में से घटाकर (द) लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में तथा चिट्ठे के दायित्व पक्ष में ( )

(14) लेनदारों पर बट्टे के आयोजन को अंतिम खाते बनाते समय दर्शाया जाता है–

(अ) लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में (ब) लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में

(स) लाभ हानि खाते के नाम पक्ष में तथा चिट्ढे के सम्पत्ति पक्ष में देनदारों में से घटाकर (द) लाभ हानि खाते के जमा पक्ष में तथा चिट्ढे के दायित्व पक्ष में लेनदारों में से घटाकर ( )

(15) देनदारों पर बट्टे का आयोजन करने पर जर्नल प्रविष्टि होगी–

(अ) Provision for Discount on Debtros A/c Dr.
To Profit & Loss A/c

(ब) Profit and Loss Appropriation A/c Dr.
To Provision for Discount on Debtors A/c

(स) Profit and Loss A/c Dr.
To Provision for Discount on Debtors A/c

(द) Provision for Dioscount on Debrors A/c Dr.
To Profit and Loss Appropriation A/c ( )

अतिलघुउत्तरात्मक प्रश्न (Very Short answer type question)

1. स्थायी सम्पत्ति पर ह्रास का लेखाकन न करने से क्या होगा?
2. मूल्यह्रास लेखांकित करने की दो विधियों के नाम लिखो?
3. एक कम्पयूटर 30,000 ₹ में खरीदा इसका अनुमानित जीवनकाल 4 वर्ष तथा अवशिष्ट मूल्य 2,000 ₹ है । प्रति वर्ष कितना ह्रास लगाया जायेगा ?
4. ह्रास लगाने की उस पद्वति का नाम बताइये जिसमें सम्पत्ति खाते का शेष शून्य हो जाता है।
5. ह्रास लगाने की उस पद्वति का नाम बताइये जिसमें सम्पत्ति खाते का शेष कभी भी शून्य नहीं होता है।
6. अवशिष्ट मूल्य से क्या आशय है?
7. सम्पत्ति बेचने पर होने वाले लाभ की क्या प्रविष्टि की जाती है।
8. स्थायी किस्त पद्वति से प्रति वर्ष ह्रास ज्ञात करने का सूत्र बतलाइये।
9. ह्रास की राशि का समायोजन अंतिम खातो में कहां दर्शाया जाता है।?
10. मूल्यह्रास की उत्पत्ति के क्या कारण है।
11. सम्पत्ति का अपलिखित मूल्य किस प्रकार ज्ञात किया जाता है।
12. किस पद्वति से लगाया गया ह्रास प्रतिवर्ष कम होता जाता है।
13. किस पद्वति से ह्रास लगाने पर सम्पत्ति के उपयोग के अनुपात में लाभ हानि खाते पर प्रति वर्ष भार नहीं पड़ता है।
14. एक कार 01.04.2008 को 3,50,000 ₹ में खरीदी प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत ह्रास लगाया जाय तो स्थायी किस्त पद्वति एवम् क्रमागत ह्रास पद्वति के अनुसार वर्ष 2010–2011 का कितना ह्रास होगा।
15. 31 मार्च 2011 को एक मशीन पर 72,000 ₹ क्रमागत ह्रास पद्वति से 10 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास लगाया गया। यह कार 01.04.2009 को खरीदी थी कार की लागत ज्ञात कीजिये।

16. एक स्कूटर का 01.04.2011 को अपलिखित मूल्य 10,500 ₹ है इसे बेचने से 10,500 ₹ का लाभ हुआ हो तो स्कूटर का विक्रय मूल्य ज्ञात कीजिये।
17. यदि प्रश्न 16 में स्कूटर 01.04.2008 को खरीदा है और इस पर स्थायी किस्त पद्वति से 10 प्रतिशत ह्रास अपलिखित किया जाता हो तो स्कूटर की मूल लागत ज्ञात कीजिये।
18. आयोजन का एक उदाहरण दीजिये।
19. गुप्त संचय के दो उदाहरण दीजिये।
20. संचय बनाने के लिए किस खाते को नाम किया जाता है।

लघुउत्तरात्मक प्रश्न (Short answer type questions)

1. मूल्य ह्यस लगाते समय किन किन तत्वों का ध्यान रखना आवश्यक है ।
2. सम्पत्ति के मूल्य में कमी किन किन कारणों से होती है ।
3. अप्रचलन से आपका क्या आशय है ?
4. स्थायी किस्त पद्धति की दो विशेषताऐं बताइये ?
5. स्थायी सम्पत्ति की लागत से आपका क्या आशय है ?
6. अपलिखित मूल्य तथा अवशिष्ट मूल्य में क्या अन्तर है ?
7. क्रमागत ह्यस पद्धति की दो विशेषताएं बतलाइये ।
8. स्थायी व क्रमागत ह्यस पद्धति में दो अन्तर बतलाइये ।
9. एक मशीन की लागत 10000 ₹ है उसे स्थापित करने पर 1000 ₹ व्यय हुए तथा मशीन का 5 वर्ष पश्चात् अवशिष्ट मूल्य 500 ₹ हो तो प्रति वर्ष लगायी जाने वाली ह्यस की राशि ज्ञात कीजिये।
10. सम्पत्ति निस्तारण खाते से आपका क्या आशय है ।
11. 1 जनवरी 2008 को खरीदी गई मशीन पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से क्रमागत ह्यस विधि से ह्यस लगाने पर 31 दिसम्बर 2010 को मूल्य 21870 ₹ रह जाता है तो सम्पत्ति का लागत मूल्य ज्ञात कीजिये ।
12. पूंजी संचय के चार उदाहरण दीजिये ।
13. संचय तथा प्रावधान में दो अन्तर बतलाइये ।
14. गुप्त संचय किस प्रकार बनाया जाता है ।
15. पूंजीगत संचय और आयगत संचय में दो अन्तर बतलाइये ।
16. गुप्त संचय बनाने के उद्धेश्य बतलाइये ।
17. पूंजीगत संचय के दो उपयोग बतलाइये ।

निबन्धात्मक प्रश्न (Essay Type Questions)

01. मूल्यह्यस से आपका क्या आशय है ? मूल्यह्यस की गणना करते समय किन किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?
02. मूल्यह्यस के लेखाकंन की क्या आवश्यकता है ? मूल्यह्यस का अप्रचलन से क्या सम्बन्ध है ।
03. मूल्यह्यस लगाने की स्थायी किस्त पद्धति एवम् क्रमागत ह्यस पद्धति में अन्तर स्पष्ट कीजिये ।
04. सम्पत्ति निस्तारण खाता खोलने पर की जाने वाली लेखा प्रविष्टियां बतलाइये ।
05. गुप्त संचय से आपका क्या आशय है ? इसका निर्माण क्यों तथा कैसे किया जाता है ।
06. आयोजन तथा संचय में अन्तर स्पष्ट कीजिये ।
07. पूंजीगत संचय तथा आयगत संचय में अन्तर स्पष्ट कीजिये ।

आंकिक प्रश्न (Numerical Questions) :

1. रमेश ब्रदर्श ने 01.04.2008 को एक मशीन 48,200 ₹ में खरीदी तथा उसे स्थापित करने पर 1800 ₹ व्यय किये। यह अनुमान लगाया गया कि मशीन 10 वर्षो तक चलेगी तथा इसका जीवन काल समाप्त हाने पर अवशिष्ट मूल्य 2000 ₹ होगा। पुस्तके प्रति वर्ष 31 मार्च को बन्द की जाती है। स्थायी किस्त पद्वति से मूल्य ह्रास लगाते हुए चार वर्षो का मशीनरी खाता तथा मूल्यह्यस खाता बनाइये।

   (Ramesh Brothers purchased a machine on 1st April 2008 costing ₹ 48,200 and spent ₹ 1800 on its installation. It is estimated that this machine will last for 10 years and its scrap

value at the end of its life will be ₹ 2,000 The books are closed on 31st March every year. Prepare machinery Account and Depreciation Account for four years depreciating by Fixed instalment method.

(Balance of Machinery Account ₹ 30,800 at the end of Fourth Years)

2. हेमन्त एण्ड सन्स की पुस्तके 31 मार्च को बन्द की जाती है उसने 1 अप्रेल 2006 को एक मशीन 1,00,000 ₹ में खरीदी और यह तय किया गया कि क्रमागत ह्रास विधि से 10 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्यह्रास लगाया जाय। पॉच वर्षो के लिए मशीन खाता बनाइये।

(Hemant & Sons whose books are closed on 31st March purchased a machinery for ₹ 1,00,000 on 1st April 2006 and it was decided to charge depreciation @ 10% per annum on diminishing balance method. Prepare Machinery Account for Five Years.)

(Ans : Balance of Machinery Account ₹ 59,049 at the end of Fifth Year.

3. एक निर्माणी संस्था ने जिसकी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द होती है, 1 जनवरी, 2004 को कुछ मशीनें 50,000 ₹ मे क्रय की अतिरिक्त मशीने 1 जुलाई 2005 को 10,000 ₹ में एवं 1 जनवरी, 2008 को 16,061 ₹ में क्रय की जो मशनी 1 जनवरी 2004 को 10,000 ₹ में खरीदी गयी थी उसे 30 जून 2007 को 5,000 ₹ में बेच दिया गया। क्रमांगत ह्रास विधि से 10 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्य ह्रास काटते हुए 5 वर्षो के लिए मशीनरी खाता बनाइये।

A manufacturing concern, whose books are closed on 31st December purchased some machines for ₹ 50,000 on 1st January,2004. Additional Machinery was acquired for ₹ 10,000 on 1st July 2005 and for ₹ 16,061 on 1st January, 2008. Certain machinery purchased for Rs. 10,000 on 1st January 2004 was sold for Rs.5,000 on 30th June, 2007.Give the machinery Account for five years writing off depreciation at 10% per annum on written down value.

(Ans. : Loss on 30.06.2007 ₹ 1,925.50, Balance of Machinery Account at the end of 5th Year ₹ 45,000)

4. एक कम्पनी का 31 दिसम्बर 2008 का संयंत्र खाता तथा उससे सम्बनिधत ह्रास प्रावधान खाते का वर्षो की खरीद के अनुसार विभाजन निम्नलिखित प्रकार से है–

(A company"s plant account at 31st December 2008 and the corresponding depreciation provision account, boroken down by year of purchase are as follows :)

Year of Purchase	Cost of Plant ₹	Provision for depreciation ₹
1992	20,000	20,000
1998	30,000	30,000
1999	1,00,000	95,000
2000	70,000	59,500
2007	50,000	7,500
2008	30,000	1,500
	3,00,000	2,13,500

मूल्यह्रास लागत पर 10 प्रतिशत की दर से लगाया जाता है कम्पनी की यह नीति है कि ह्रास की गणना के उद्येश्य से प्लांट का क्रय, विक्रय तथा निस्तारण संम्बन्धित वर्ष की 30 जून को किया जाता है और इस बात का ध्यान नही रखा जाता कि सही तिथि कौनसी है जबकि घटना घटित हुई।

वर्ष 2009 में निम्नलिखित व्यवहार हुए–

(i) 1,50,000 ₹ की राशि का प्लांट खरीदा।
(ii) वर्ष 1998 में 17,000 ₹ में खरीदा गया प्लांट रद्व कर दिया गया।
(iii) वर्ष 1999 में 9,000 ₹ में खरीदा गया प्लांट 500 ₹ में बेच दिया गया ।
(iv) वर्ष 2000 में 24,000 ₹ में खरीदा गया प्लांट 1,500 ₹ में बेच दिया

आप वर्ष 2009 के लिये (1) प्लांट खाता (2) ह्रास प्रावधान खाता तथा (3) प्लांट निस्तारण खाता बनाइये।

(Depreciation is at the rate of 10% per annum on cost. It is the company"s policy to assume that all purchases, sale of disposal of plant occurred on 30th june in the relevant year for the purposse of calculating depreciation, irrespective of the precise date on which these events occurred.
During 2009 the following transaction took place :

(i) Purchase of Plant amounted to ₹ 1,50,000
(ii) Plant that had been bought in 1998 for ₹ 17,000 was scrapped.
(iii) Plant that had been bought in 1999 for ₹ 9,000 was sold for ₹ 500
(iv) Plant that had been bought in 2000 for ₹ 24,000 was sold for ₹ 1,500

You are required to prepare for 2009 (1) Plant Account (2) Provision for Depreciation Account and (3) Disposal of Plant Account.)

(Ans. : Balance of plant A/c ₹ 4,00,000 Balance of provision for Depreciation A/c ₹ 1,92,200 and Loss on Plant disposal ₹ 400)

5. एक फर्म ने 1 जुलाई 2006 को 250000 ₹ में एक मशीन खरीदी जिसमें 50000 ₹ का एक बॉयलर भी शामिल था । प्रथम चार वर्षो में क्रमागत ह्यस पद्धति के अनुसार 20 प्रतिशत की दर से ह्यस लगाया गया । 30 जून 2010 को बॉयलर क्षतिग्रस्त हो गया और उसे 94000 ₹ में बेच दिया । वर्ष 2010 के लिए मशीन खाता बनाइये ।

(A Machinery was purchased by a firm on 1st July, 2006 for ₹ 250000 including a boilor worth ₹ 50000. For the first four years depreciation @ 20% had been charged on diminishing balance method. On 30.6.2010 the boilor was damaged and sold for ₹ 9400. Prepare machinery account for the year 2010.)

(Ans: Loss on sale of boilor ₹ 11080 and Balance of Machinery Account ₹ 65536.)

6. 1 जनवरी 2007 को रमेश ने दो ट्रक 4 लाख ₹ में खरीदे और क्रमागत ह्यस पद्धति से 20 प्रतिशत की दर से प्रति वर्ष ह्यस लगाया । 1 जनवरी 2010 को एक पुराने ट्रक के स्थान पर नया ट्रक 250000 ₹ मूल्य का जोगाराम से खरीद लिया । ट्रक विक्रेता ने उसे पुराने ट्रक को 60000 ₹ मूल्य पर ले लिया । चार वर्षो के लिए मोटर ट्रक खाता बनाईये । उसके द्वारा अपनी बहियां 31 दिसम्बर को प्रति वर्ष बन्द की जाती है ।

(Ramesh purchased two trucks for ₹ 400000 on 1.1.2007 and depreciation was charged at 20 percent per annum by diminishing balance method. On 1.1.2010 a new truck of the value of ₹ 250000 was purchased in place of an old truck from Joga Ram. The seller took that old truck at a value of ₹ 60,000. Prepare Motor Truck Account for four years. He clolses his books every year on 31st December.)

7. एक सीमित कम्पनी के संचालको नें 1 लाख ₹ के गुप्त संचय को समायोजित कर चिट्ठे में सही स्थिति दिखाने का निर्णय लिया। एक लाख ₹ निम्नलिखित प्रकार निर्मित किया गया था।–

(The Directors of a Limited company prossessing secret reserve estimated at ₹ 1,00,000 decided to adjust the Balance Sheet so as to disclose true position. The amount of ₹ 1,00,000 was made up as follows)-

(a) 1,00,000 ₹ के रहतिये का मूल्य 10 प्रतिशत से कम किया । (Reduced the value of stock by 10% on ₹ 1,00,000.)
(b) विनियोगों के विक्रय पर लाभ 20,000 रू. का प्रयोग बचे हुए विनियोगों का मूल्य घटाने में किया गया । (Profit on sale of investments used to reduce the value of the remaining investments below cost ₹ 20,000).
(c) आयकर का प्रावधान 10,000 ₹ अधिक था । (Excessive Provision for Income Tax Rs. 10,000).
(d) अधिक मूल्य ह्यस लगाकर मशीनरी का मूल्यांकन 58,000 ₹ कम से किया । (Undervaluation of Machinery resulting from excessive deprecation Rs. 58,000).
(e) मोटर वाहन को 2000 ₹ से अपलिखित किया । (Motor vehicles written off ₹ 2,000).

1 लाख ₹ का वह भाग जिससे आयगत लाभों को कम किया गया है उसे लाभांश समानीकरण कोष में हस्तान्तरित करना निश्चित किया। शेष राशि को पेंन्शन कोष में हस्तान्तरित कर दिया गया और उतनी ही राशि सरकारी प्रतिभूतियों में विनियोजित की गई जिससे पेंन्शन का भुगतान किया जा सके। कम्पनी की पुस्तकों में इन लेखों की आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

(The portion of ₹ 1,00,000 representing the extent to which revenue had been penalized in the past is to be placed to a Reserve for the equalization of dividends. The remainder to be placed to a pension Fund, an equivalent amount to be specifically invested in gilt-edged securities so as to provide for the payment of pensions. Pass the necessary Journal Entries, to record the operation in the books of the company.)

(Ans. : Investment in Govt. Securities ₹ 20,000)

8. एक व्यापारी की पुस्तको में 1 जनवरी 2006 को 2,700 ₹ का डूबत ऋण एवं संदिग्ध ऋण प्रावधान खाते का जमा का शेष था । वर्ष के डूबत ऋण 2,100 ₹ के थे । वर्ष 2006 के अन्त में 72,000 ₹ के देनदार थे तथा संदिग्ध ऋणो के लिए 5 प्रतिशत प्रावधान बनाया गया । वर्ष 2007 में 4,050 ₹ के डूबत ऋण थे । 31 दिसम्बर 2007 को देनदार 71,000 ₹ के थे तथा 1 प्रतिशत की दर से प्रावधान रखने की आवश्यकता थी । वर्ष 2008 में 300 ₹ के डूबत ऋण थे तथा वर्ष के अन्त में 30,000 ₹ के देनदार थे। देनदारो पर 1 प्रतिशत की दर से प्रावधान करने की आवश्यकता थी।
डूबत एवं संदिग्ध ऋण प्रावधान खाता बनाइये तथा बताइये कि बाद के वर्षो में ये मदे लाभ–हानि खाते तथा स्थिति विवरण में किस प्रकार दर्शायी जावेगी।

(The provision for bad and doubtful debts showed a credit balance of ₹ 2,700 in the books of a trader on 1st January, 2006. The bad debts for the year amounted to ₹ 2,100. The debtors at the end of the year of 2006 were ₹ 72,000 and provision for doubtful debts at 5% was created. The bad debts for the year 2007 amounted to ₹ 4,050. On 31st December,2007 the amount of debtors stood at ₹ 71,000 and a provision of 1% was required to be kept. The bad debts for the year 2008 were Rs. 300 and the debtors at the end of the year amounted to ₹ 30,000. A provision of 1% was required to be kept on debtors.

Prepare the provision for bad and doubtful debts account and show how these items would appear in the profit and loss account and the balance sheet for the each of three successive years.

(Ans. : P & L A/c debited with ₹ 3,000 and ₹ 1,160 at the end of the year 2006 and 2007 respectively and credited with ₹ 110 at the end of the year 2008.)

उत्तर

स्वयं जांचिय–1 : (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य

स्वयं जांचिय–2 : (1) सत्य (2) असत्य (3) असत्य (4) असत्य (5) सत्य (6) असत्य (7) असत्य (8) असत्य

स्वयं जांचिय–3 : (1) मूल्य, कमी (2) लागत में जोड़ा (3) अवशिष्ट मूल्य (4) तकनीक, अप्रचलन (5) पूंजी लाभ (6) स्थायी किश्त (7) अधिक (8) सामान्य (9) पूंजीगत लाभों (10) गुप्त

स्वयं जांचिय–4 : (1) प्रावधान (2) कम, गुप्त (3) अधिक (4) प्रावधान (5) लाभ हानि नियोजन (6) प्रावधान

बहुचयनात्मक प्र◻न (1) ब (2) द (3) ब (4) द (5) ब (6) ब (7) ब (8) स (9) स (10) अ (11) स (12) अ (13) स (14) द (15) स

अति लघुउत्तरात्मक प्रश्न (3) 7000 रू. (4) स्थायी किस्त पद्धति (5) क्रमागत ह्रास पद्धति (13) स्थायी किस्त पद्धति (14) 35000, 28350 (15) 800000 (16) 21000 (17) 15000 (20) लाभ हानि नियोजन खाता

लघुउत्तरात्मक प्रश्न (9) 2100 (11) 30000